।।श्री सुरभ्यै नमः।।

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

जून 2025

वर्ष: 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक: 03

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क : 2100 रुपये मात्र मूल्य : 20 रुपये

सुरभि उवाच...

हे मेरे प्यारे पुत्रों !

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

आप सभी का सदा ही मंगल हो! संसार में सबसे पवित्र कोई है तो वह मेरा वंश है। इसलिये जब हृदय में पवित्रता आती है तभी कोई व्यक्ति गोसेवा की तरफ आ पाता है या पूर्व कर्मों से कोई गोमाता के निकट आता है और गोमाता के संग रहता है तो उसमें अनायास ही पवित्रता आने लगती है।

हे मेरे प्रिय पुत्रों ! आप सभी से अपेक्षा है कि गोमाता की सेवा में जिएं, गोमाता के कष्टों को अपना कष्ट समझें। गोसेवा में आप सभी को जो भी जिम्मेदारी मिली है उसमें गहराई से उतरना होगा। इतने बड़े संसार में गोसेवक बहुत ही सीमित संख्या में है और तुलनात्मक सेवा योग्य गोवंश की संख्या बहुत अधिक है। इसलिए इतने अधिक पीड़ित और निराश्रित गोवंश को सुखी करने हेतु तुम्हें और अधिक समय और समझ लगाने की आवश्यकता है।

हे प्रिय पुत्रों ! आपको गोसेवा में तल्लीनता से लगा देखने से कई लोगों को प्रेरणा मिलेगी और गोसेवकों की संख्या में वृद्धि होगी। आपकी गोसेवा में गहरी निष्ठा का संसार पर गहरा प्रभाव पड़ेगा दूसरी तरफ तुम्हारी गोसेवा अनियमित, शिथिल, ऊपरी–ऊपरी दिखावा मात्र होगी तो उसका संसार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसलिए मेरे पुत्रों आप मन लगाकर भाव से अधिक से अधिक गोसेवा करो। आपके अलावा मेरे वंश की सेवा के लिये है ही कौन? मैं और किससे उम्मीद करूं?

हे मेरे प्रिय पुत्रों ! इस भयंकर गर्मी में मेरा जो वंश निराश्रित है वो बहुत ही कष्टों में जीवन गुजारने को विवश है। उसको ना तो पीने को जल मिल रहा है, न ही दो समय पाने को भोजन मिल रहा है और बैठने को पर्याप्त छाया भी नहीं मिल रही है। हे पुत्रों ! इस संकट की घड़ी में गोवंश के प्राण रक्षा हेतु आगे आएं और गोमाता की पीड़ा दूर कर पुत्र होने का धर्म निभाएं।

आपकी

अपनी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम् ।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम् ।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक:3

ज्येष्ठ मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शाः 1947 जून–2025

१. **श्री गोपाल गोवर्धननाथजी पधारे अभिनव वृज-** एक गोप्रेमी गोपाल भक्त	04
२. **श्री गोकृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव २०२५**	06
३. **श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद-** परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज	07
४. **बहुत उत्तम है नंदी की सेवा-** पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	12
५. **गोसेवा-गोमहिमा-** पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	14
६. **गीता ज्ञान-**पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज	16
७. **राजा नृग की कथा-** पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	19
८. **युवाओं के साथ मन की बात**- पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज	22
९. **गोकृपा कथा-** पू. ग्वालसंत स्वामी श्री गोपालानंद सरस्वती जी महाराज	25
१०. **श्रीभक्तमाल कथा-** पू. ब्रह्मचारी श्री मुकुन्द प्रकाश जी महाराज	28
११. **श्रीमद्भागवत कथा**- गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज	30
१२. **देश में हो रहे गोवध में क्या हमारी हिस्सेदारी है-** अम्बा लाल सुथार, सम्पादक	32
१३. **संस्था समाचार-** मई माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण	33

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,

त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री गोपाल गोवर्धननाथजी पधारे अभिनव बृज

21 अप्रैल 2025 को श्री गोपाल गोवर्धननाथजी परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराज के संग अभिनव बृजमंडल नन्दगांव पधारे। श्री मीरा माधव जी रथ में बृज से नन्दगांव साथ ही आए। गोवत्सा शैलजाजी व गोवत्सा सरस्वतीजी भी शरणागति दीक्षा लेकर आई है। जब से श्री गोवर्धननाथजी पधारे हैं अभिनव बृजमंडल में सतत् उत्साह प्रवाहमान है। श्री नन्दबाबा फूले नहीं समाते हैं। एक-एक कार्य पर उनकी पैनी दृष्टि है। ठाकुरजी की अष्ट प्रहर सेवा में कोई कमी न रह जाए इसका वे पूरा ध्यान रख रहे हैं। ठाकुरजी को नयनों में रखे, आंखें मूंदी-मूंदी सी रह रही हैं। श्री नन्दबाबा जब जी चाहे दत्त कुटिया से उतर आते हैं और श्री गोपाल गोवर्धननाथजी की ओर अपलक दृष्टि से निहारते रहते हैं। ठाकुरजी से इनका सतत् संवाद बना रहता है। अभिनव बृजमण्डल नन्दगाँव में अब श्री गोपाल गोवर्धननाथजी ही शासक हैं। उन्हीं के भावों के अनुरूप सभी अभिनव बृजवासी गोसेवा कार्यो में व्यस्त हैं।

प्रतिदिन रात्रि शयन से पूर्व श्री गोपाल गोवर्धननाथजी के सम्मुख खड़े होकर दैनिक कार्य एवं गतिविधियों की सम्पूर्ण जानकारी देने हेतु परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराज के आदेश पर श्री हीरसिंहजी गोष्ठों में कितनी मात्रा में कितना चारा, दाना आदि पूज्या गैयाओं को पवाया गया की जानकारी, श्री खेतेशजी कार्यालय संबंधी कार्यो का विवरण, चिकित्सक डॉ. नरेन्द्रजी गोचिकित्सा-गोसेवा की जानकारी, सिविल इंजीनियर श्री कैलाशजी निर्माण कार्यो की जानकारी एवं आलोकजी सिंहल व धर्मशरणजी प्रशासनिक जानकारियाँ प्रस्तुत करते हैं। 07 मई से प्रारम्भ इस प्रकार का क्रम अब दैनिक नियम बन चुका है। यहाँ अब अभिनव बृजमंडल में श्री गोपाल गोवर्धननाथजी के समक्ष सभी अपने-अपने कार्यो का लेखा-जोखा प्रस्तुत करते हैं तथा सुधार एवं मार्गदर्शन हेतु ठाकुरजी से प्रार्थना करते हैं।

अभिनव बृजमंडल में श्री गोपाल गोवर्धननाथजी के शुभागमन का सबसे प्रगट लाभ गैय्या मैया के स्वास्थ्य में दिख रहा है। वह पल हम कैसे विस्मृत कर सकते हैं जब सभी ग्वाल-ग्वालिनें, बालक-बालिकाएं व अन्य कार्यकर्ता, ट्रस्टीगण आदि बहु संख्या में मुख्य द्वार पर श्री गोपाल गोवर्धननाथजी एवं श्री मीरा माधव जी के दर्शन एवं स्वागत-सत्कार में पलके बिछाए दोपहर से ही तपती धूप में खड़े थे। जैसे ही रथ का आगमन हुआ चहुं ओर से पुष्प वर्षा की गई। चौक में रंगोली बनाई गई। मंगल गीत गाए गए। सभी के लिए षडरस व्यंजनों का प्रसाद बना। जिस-जिस मार्ग से श्री गोपाल गोवर्धननाथजी एवं श्री मीरामाधव जी का रथ निकला दोनों और के गोष्ठों की गैय्याएं अतिप्रसन्न दिखाई दे रही थी। दौड़ दौड़ कर गैय्याएं निर्निमेष दृष्टि से रथ को देख रही थीं और आगे बढ़चढ़ कर अपना आनंद व्यक्त कर रही थीं। यह दृश्य देखने वाली निश्चय ही कुछ विशेष हंस आत्माएं ही रही होंगी अन्यथा ऐसा अद्भुत, अलौकिक, आनन्दित करने वाला दृश्य किसी साधारणजन को तो दुर्लभ ही है। ग्वाले भी वही हैं, गैय्याएं भी वही हैं लेकिन एक चमत्कार सा दिखाई पड़ रहा था। जब से श्री गोपाल गोवर्धनाथजी पधारे हैं तब से ग्वालों के मनोयोग और कार्यक्षमता में दोगुना उत्साह परिलक्षित हो रहा है, वहीं धन्वंतरि में भी गैय्या मैया के कष्टों में न्यूनता आने लगी है। यहाँ सर्वत्र उल्लास और उमंग है।

अभी श्री गोपाल गोवर्धननाथजी की बैठक धर्माचार्य में ही है। सभी भक्तजन वहीं पूजन, अर्चन, स्तुति, मंत्रजाप, संकीर्तन आदि करते हैं। श्री ठाकुरजी की अष्ट प्रहर की सेवा में सामने ही बड़ी रसोई है जहाँ पूरी शुद्धता से गोव्रति भोग बनता है। बालभोग, ग्वालभोग, राजभोग फिर सायंकाल गैय्या चराने के बाद जैसे ही श्री गोपाल गोवर्धननाथजी पधारते हैं, विभिन्न फल, आमरस, मखाने, सूप आदि की सेवा दी जाती है। इसके पश्चात ब्यालू में ग्वालबाल संग हलवा, खीर व अन्य मिष्ठान्नों का भोग तो लगता ही है यहाँ की कढ़ी ठाकुरजी को विशेष प्रिय है। कुछ भगवत् प्रेमी वानप्रस्थी भी नन्दगाँव रहने लगे हैं और यथायोग्य सेवा में बने रहते हैं।

अभिनव बृजमंडल के चारों ओर पर्वतमालाओं का अद्वितीय सौन्दर्य है, जहाँ का सूर्योदय और सूर्यास्त देखने हेतु आगंतुकों की ललक बनी रहती है। गोष्ठों के बाद की बृजभूमि हरी चादर ओढ़े है। सर्वत्र ऊंचे-ऊंचे वृक्ष हैं, सुंदर चलते हुए फव्वारे, गलबैंया लेकर घूमते ग्वालबाल सखा कभी लस्सी के ग्लास पीते हुए, कभी पेड़े-बर्फी खाते हुए, कभी फलों का सेवन करते हुए, उछलते-कूदते दृष्टिगत होते हैं।

जब से अभिनव बृजमंडल में श्री गोपाल गोवर्धननाथजी बिराजे हैं, अतिथि निवास पूरा भरा रहता है। अनेक स्थानों से बसें भरकर लोगों का आगमन होता ही रहता है। स्वागत कक्ष के पास ही पंचगव्य उत्पाद प्रदर्शनी लगी है जहाँ से विभिन्न प्रकार के गोउत्पाद- घी, लस्सी, मिठाइयाँ, बिस्किट, आइसक्रीम, तेल, शैम्पू, साबुन, क्रीम, धूपबत्ती, गोमूत्र अर्क आदि प्राप्त किये जा सकते हैं।

अतिथियों के लिए पूर्ण सुविधा यहाँ उपलब्ध है। वृहद् परिसर में गोदर्शन एवं अन्य प्रकल्पों के दर्शन हेतु ई-रिक्शा और ई-साइकिल भी उपलब्ध रहते हैं। श्री ठाकुरजी की रसोई, अन्नपूर्णा प्रसादगृह, आवासीय गुरुकुलम, गोचिकित्सालय, बृज निवासियों हेतु चिकित्सालय में श्रेष्ठ वैद्यों की व्यवस्था, रसायन मुक्त आहार आदि सब कुछ सर्वश्रेष्ठ सुविधाएं यहां हैं। पूरा परिसर प्रदुषण मुक्त है।

श्री गोपाल गोवर्धननाथजी की असीम कृपा, परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराज का तपोबल और उनको पहचानने योग्य श्रेष्ठतम आत्माओं का जुड़ाव ही अभिनव बृजमंडल, श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नन्दगांव दिव्य शक्ति प्राप्त कर सका है। यहाँ सभी संप्रदायों के संतों-साधकों, सभी परम्पराओं और अनेक भाषा-भाषी लोगों का आवागमन अनवरत बना ही रहता है।

श्री गोपाल गोवर्धननाथजी का अप्रैल माह में अकस्मात लेकिन स्थायी रुप से पूरी तन्मयता से पधारना, बिराजमान होना, अभिनव बृजमंडल को आनन्द से भर देना, सभी गैय्या मैया को स्वस्थ और पुष्ट कर देना, भक्तों की पुकार सहज सुन लेना, कलियुग में एक विशिष्ट लक्षण युक्त द्वापर ही दिखाई दे रहा है। परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराज की अन्तश्चेतना का प्रखर प्रमाण, उनके तप से प्रसन्न उनके सखा श्री गोपाल गोवर्धननाथजी एवं पथ-प्रदर्शक सदैव साथ रहने वाले कल्पगुरु दत्तात्रेय भगवान की ही अखण्ड प्रसन्नता लक्षित होती है। एक विशिष्ट गोरक्षक, एक विशिष्ट अभिनव बृजमण्डल में कुछ विशिष्ट आत्म चेतनाओं के साथ नव-नव स्वर देते चले जा रहे हैं। यह धरा धन्य हो गई है। ऐसे हमारे परम् आराध्य परम पूज्य श्री गोपाल गोवर्धननाथजी और उनके सखा परम् श्रद्धेय गोऋषिजी महाराज को कोटि कोटि नमन है! जय गोमाता ! जय गोपाल !

।।श्रीसुरभि हरिहराय नमः ।।

श्री गोकृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव 2025

पूज्य साधु संत महात्माओं एवं आदरणीय धर्मात्मा सज्जन भाइयों और बहिनों ! आपको आमंत्रित करते हुए हृदय अत्यंत आनंदित हो रहा है कि श्री गोपाल गोवर्धन नाथजी की मंगल उपस्थिति एवं परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री के पावन सानिध्य में सहस्रों गोमाताओं के मध्य श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा स्थापित तथा संचालित अभिनव वृजमण्डल, मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य की पावन धरा पर 10 जुलाई 2025 से 7 सितंबर 2025 पर्यन्त शताधिक सचल तीर्थ स्वरूप साधु-संतों और नारायण स्वरूप ! दण्डी स्वामियों के नेतृत्व में श्री गोकृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव का दिव्य व भव्य आयोजन होना निश्चित हुआ है। इस अवधि में प्रतिदिन सुरभि हरिहर महापूजापूर्वक शारीरिक स्वास्थ्य हेतु पंचगव्य कायाकल्प, अलौकिक जप महायज्ञ अनुष्ठान, श्रीराम चरित्र मानस मास पारायण भाव यज्ञ कथा और श्रीमद्भागवद मास पारायण ज्ञान यज्ञ कथा के महामंगलकारी कार्यक्रम होने सुनिश्चित हुए हैं।

अतः आप सभी पूज्य साधु-संत-महात्माओं एवं श्रद्धालु सज्जन भाई-बहिनों से सादर सप्रेम अनुरोध है कि श्री गोकृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव में सम्मिलित होकर धार्मिक तथा आध्यात्मिक जीवन विकास का अमोघ लाभ प्राप्त कीजिए।

नोट :- व्यास पूजन और गुरु पूर्णिमा महोत्सव दिनांक 10 जुलाई को आयोजित होगा।

आयोजक : श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास

आयोजन स्थल : अभिनव वृजमंडल गोवर्धन, श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नन्दगांव, केसुआ, रेवदर, सिरोही (राजस्थान)

सम्पर्क नं. 9030010010, 8209930427, 7742003311, 7073000150

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

स्वतंत्र भारत के शासकों का गाय के साथ व्यवहार

(श्री गोनवरात्री महामहोत्सव 2014)

.......पिछले अंक से आगे

पहाड़, ओरण, तालाब, आगोर, वन, नदियों के किनारे 20-20 किलोमीटर तक जैसा कि डॉक्टर साहब ने कहा 4-4 योजन तक नदियों के किनारे कोई गाँव, नगर नहीं बसता था, ये सब भूमियाँ गोमाता के विचरण के लिये रहती थी, यह वैदिककाल का नियम है। इन पर केवल ऋषि और गोपालक ही रहते थे कच्चे घरों में। यह अनादिकाल से भारत की परम्परा थी और आज जो हो रहा है उसको हम सब समझ रहे हैं।

तो हम निवेदन कर रहे थे कि ये सब गोभूमियाँ थी और अधिकतर गोभूमियों पर अतिक्रमण आजादी के बाद हुआ और समाज की बजाय शासन का अतिक्रमण अधिक हुआ। गो के विनाश की बात तो बाद में है, ये तो गो के रहने की जमीन को ही खा गये, खेतों से, गोपालक के घर से और गोचर से गाय को निकाल दी और सड़क पर गाय को लाकर खड़ी कर दी बिना किसी योजना के। आजाद भारत के लोग गाय के शत्रु बन गए हैं, यद्यपि उनके मन में शत्रुता नहीं होगी, लेकिन जितना शत्रुता का व्यवहार भारतीयों ने और भारत के शासकों ने किया है इतना अंग्रेज, तुर्क, पठान कोई नहीं कर सके। भारत सरकार की वेबसाइट पर संख्या पड़ी है, 1957 में 18 करोड़ और कुछ लाख गाएं थी और आज कितनी है? अगर उनके जन्म लेने और मृत्यु दर को साथ रखते हुए उसकी संख्या को हम 60 साल तक गिने, तो आज हमारे यहाँ पर 200 करोड़ गोवंश होना चाहिए था। उसकी जगह पर 12 करोड़ से कुछ ऊपर गोवंश देश में है। यह भी 2007 की गिनती। भारत सरकार की गिनती से, अपनी गिनती नहीं। अपने पास कोई स्रोत नहीं है। ये वेबसाइट आंकड़े है। अब आप बतायें 188 करोड़ गोवंश का हत्यारा कौन है? आजाद भारत में इतना गोवंश काल कल्वित हुआ है बिना मृत्यु मरा है, मृत्यु से मरता है वो अलग है। इसका हत्यारा कौन?

हम रात को महाराज जी को कह रहे थे कि हजारों वर्षो से गोवंश का उपकार हम सब पर रहा है। केवल तीन-चार दशकों से हमें हमारे निर्वाह के लिए और अन्य आवश्यकताओं के लिए यांत्रिक उपाय प्राप्त हो गए तो हमने इतनी भयंकर उपेक्षा और तिरस्कार किया। हम कैसे मानव? धर्म, अध्यात्म, ईश्वर सब छोड़ दें, मानवता कहां गई और यह हम लोग बोल रहे हैं जो समाज के अगवा है, शासन के अगवा हैं वे लोग इस पर क्यों नहीं सोच रहे हैं? अन्न, जल, हवा तीनों के तीनों में विष घुल गया है यह सब जानते हैं। पृथ्वी में, हवा में, जल में विष घुलने से पूरा राष्ट्र रोगी हो रहा है और इन रोगों से छूटने का, अन्न, जल, हवा को शुद्ध करने का उपाय केवल गाय है और इसका प्रयोग नहीं किया जा रहा है, इस पर चिंतन नहीं किया जा रहा है, दूसरी बड़ी-बड़ी बातें की जा रही है।

तो हम यह निवेदन कर रहे थे कि 60 सालों के बाद अपेक्षित विचारधारा जो भारतीयता के निकट थी, ऐसी विचारधारा से निकला हुआ राजनीतिक दल इस समय देश के केंद्रीय सत्ता पर बहुमत से है कोई बहाना नहीं है। राज्यसभा का भी हो जाएगा समाधान बहाना कोई नहीं रहेगा, पर फिर ऐसा अवसर भी नहीं

आएगा। अब अगर यह नहीं होता है तो फिर कब होगा? वह व्यक्ति जो 60 साल पहले कह रहा था कि गाय और ग्राम से देश का विकास नहीं होगा, आज भी 60 साल बाद जिस विचारधारा से अपेक्षा रखी थी उस विचारधारा को सत्ता तक पहुँचने के बाद भी ऐसी बात आती है, उनसे भी ज्यादा सख्ती के साथ में तो हृदय चूर-चूर हो रहा है फिर भी हम आशावादी है।

डॉक्टर साहब से बातें सुनी, सब संत कह रहे हैं, हम आस्तिक हैं। हमारा शास्त्रों पर, संतों पर, संतों की वाणी पर, आचार्यो की वाणी पर, हमारी आस्था का आधार ही वेदवाणी, गुरुवाणी और संतवाणी है, इसलिये हम कभी हताश, निराश नहीं होते, हार कभी नहीं मानेंगे, पुनः पुनः जन्म लेना पड़ा तो भी उस कार्य से अपने को जोड़ेंगे जिसमें भगवान की प्रसन्नता निहित है, जगत का हित निहित है और आत्मा का कल्याण समाहित है। गो के संरक्षण में, गो की वृद्धि में, गो के आदर में स्वयं व्यक्ति की आत्मा का कल्याण, जगत का हित और जिसने जगत को रचा है उस परमात्मा की प्रसन्नता निहित है इसलिये हम इस कार्य से जुड़े और संत भी सब क्यों आये हुए हैं यहाँ, सभी महापुरुष हैं। यहाँ कोई मठ नहीं, मंदिर नहीं, दान नहीं, दक्षिणा नहीं, चाय नहीं, सब अपने-अपने किराया भाड़ा देकर आते हैं। देकर ही जाते हैं। केवल डॉक्टर साहब ही नहीं, सभी संत अपनी-अपनी झोली में से निकालकर देते हैं। क्यों आते हैं यहाँ? क्योंकि इनका गाय के साथ आत्मीय संबंध है। यतो गाय ततो वयम्- गाय हैं तो ही हम हैं, जहाँ गाय है वहाँ हम हैं। गाय है तो ही हमारा अस्तित्व है। यह हमारे पूर्वजों का उद्घोष है और यह उद्घोष कोई भावावेश में किया हुआ नहीं है। गाय के बिना हमारी उपासना जो है, गाय के बिना हमारा आरोग्य सम्भव नहीं है, हमारी दीर्घ आयु है वह हो नहीं सकती। सतोगुण के बिना उपासना हो नहीं सकती और सतोगुण की वृद्धि सात्विक आहार से होती है। आहार शुद्धि से सतो शुद्धि और सतो शुद्धि से ध्रुव स्मृति। आहार की शुद्धि से अंतकरण की शुद्धि होती है उससे स्मृति स्थाई होती है और उसी से ही हम उपासना में आगे बढ़ सकते हैं। हम शरीर से निरोग, मन से पवित्र और बुद्धि से जागृत रहना चाहते हैं तो सभी में गाय के गव्य चाहिए। हम दीर्घायु रहना चाहें तो भी गोगव्य आवश्यक है और मानव जीवन के लक्ष्य के लिए ये तीनों चीजें- दीर्घायु, आरोग्य और अंतकरण की शुद्धि आवश्यक है। मानव जीवन के लक्ष्य की प्राप्ति के लिए ये तीनों ही आवश्यक है। राम नाम जप से कल्याण करें या गायत्री मंत्र से कल्याण की ओर बढ़ें पर ये तीन चीजें हम सभी के लिए आवश्यक है।

इन सबके बीच में हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि साल भर से हमारे मन में आ रहा है कि हम गोरक्षा के लिये एक ऐसा अनुष्ठान करें गायत्री मैया का, गायत्री से शक्तिशाली मंत्र दुनिया में कहीं नहीं है, हम लोगों के लिए तो नहीं है। वैदिक धर्मावलंबियों के लिए तो गायत्री मंत्र से कोई बड़ा मंत्र नहीं है। इस मंत्र से हम निष्काम भाव से गोमाता की महिमा को पुनः स्थापित करने के लिए ईश की आराधना करें और वह मंत्र 24 कोटि महापुरश्चरण के रूप में हो। 100 लोग हो हमने कल्पना की। बाहर भी लोग सुन रहे हैं और संत भी सुन रहे हैं, पंडाल में भी सुन रहे हैं। सबसे हमारी अपील है कि इसमें बहुत बड़ा समय नहीं लग सकता। बहुत सारे देश में विप्र हैं, गायत्री प्रेमी हैं, गो प्रेमी हैं उनसे हम प्रार्थना करते हैं कि डॉक्टर साहब तो व्यक्तिगत रूप से आप सबको जो जो उनके संपर्क में हैं उनको निर्देश करेंगे ही, पर हम सामूहिक रूप से प्रार्थना करते हैं कि गोष्ठ के मध्य में रहकर शास्त्र विधि का पालन करते हुए वे गोगव्यों का सेवन करें, प्रतिदिन 5000 की संख्या में जप प्रारंभ करें और 16 महीना में यह अनुष्ठान 24 लाख का एक व्यक्ति का संपन्न हो जाता है । ऐसे सो साधक

देश भर में बैठें, गौशालाओं के मध्य में रहे उनके निवास, ब्रह्मचर्य पालन पूर्वक हो यह अनुष्ठान, हम पिछले महीने भर से बात कर रहे हैं, कुछ सज्जनों ने कहा कि हमारी ओर से कोई बैठे तो हम उनकी व्यवस्था कर लें। तो हमने पेशेवर विप्र देवताओं से निवेदन किया कि आप करिए तो वे बोले कि हम 16 महीने तो नहीं रह सकते। हमारे तो घर है, बच्चे हैं।

तो इसके लिये कुछ संत तैयार हुए हैं। 24 व्यक्तियों को इसी श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ में गायत्री पुरश्चरण के लिए बैठाने का संकल्प किया और उनके लिए कुटियाएं भी निर्मित हो गई है। आज डॉ साहब से वहां शुभारंभ करवा देंगे। वह रंग भी डॉक्टर साहब के कपड़ों का ही रंग है कुटियाओं के ऊपर वाला और शेष जो है पुरश्चरण वह हम पूज्य डॉक्टर साहब और हमारे आदरणीय पूज्य श्रद्धेय धर्माचार्यो के चरणों में अर्पित करते हैं कि 76 पुरश्चरण करने वाले अलग- अलग प्रांतों में और अलग-अलग गौशालाओं में बैठे तो यह अनुष्ठान अपने आप में यह कार्य संपन्न कर लेगा ऐसा हमारा ह्रदय कहता है और आप सब इसका समर्थन करेंगे।

इस बीच जो प्रयास महापुरुषों के मार्गदर्शन में हो सकता है वह अवश्य करेंगे, पर मंच से हम कुछ नहीं कर सकते क्योंकि जो कुछ अपेक्षा रखी गई थी जो कहा और सुना जा रहा था उससे विपरीत, राजस्थान में तो उससे विपरीत हो रहा है। पिछले 10 महीने से राजस्थान में तो गाय के साथ में पहले कुछ और था और अब कुछ और हो रहा है। यह दुनिया में लोग सुन रहे हैं इस कारण हम बात नहीं कर पा रहे हैं पर गो की उपेक्षा हो रही है, गो से जुड़े लोग परेशान हो रहे हैं, गोचर भूमियों में गोशालाएं क्यों चलाई जा रही है, उसे अपराध माना जा रहा है, ऐसा पिछले कुछ महीनों से हो रहा है जो नहीं होना चाहिए।

आप सभी गो प्रेमी हैं, धर्म प्रेमी हैं, आपके मत से ही सरकारी चुनी जाती हैं। आपके दान से ही सारी धार्मिक संस्थाएं चलती हैं। जिस तरह से आप दान देने में उदारता बरतते हैं, धार्मिक संस्थाओं को चलाते हैं, ऐसे ही आपके द्वारा चुने हुए शासकों को गोसेवा के लिए प्रेरित करें, बाध्य करें, आप कर सकते हैं। आप यहाँ दान देंगे और जिनको आप वोट देते हैं उनको कहेंगे कि हमको आरक्षण दे दो, हमें, हमारे आदमी को टिकट दे दो, हमारे आदमी को मंत्री बना दो तो गाय का कोई काम आपसे नहीं होगा। आप उनसे ऐसी अपेक्षा न रखें, गाय की अपेक्षा रखें। ऐसे लोग जो व्यक्तिगत स्वार्थ रखते हैं वे गाय की बात नहीं कह सकते। निष्कामभाव से गोसेवा से जुड़े हुए लोग हैं वे लोग अगर शासन को कहे कि भाई हमने तो आपको इसीलिए वोट दिया है और दिया है, पूरे देश के जो 60 साल से वह गोभक्त 15 से 20 प्रतिशत ऐसा समाज था वह जो उनको शायद 60 के दशक में ही पता लग गया था कि शासन प्रायोजित गोहत्या भारत में हो रही है, वे लोग उस शासन में जाने वाले लोगों को मत नहीं देते थे। वह लोग 60 साल से गोहत्या के पाप से बचे हुए थे। जनता के द्वारा चुना हुआ शासक जो पुण्य और पाप करता है उसका फल जनता को भोगना होता है जनता उसकी भागीदार होती है।

तो अगर आजाद भारत के शासकों के कानून के संरक्षण में गो अधिकारों का अपहरण और गोवंश का विनाश हुआ है तो शासकों को चुनने वाली जनता को उसका पाप लगा है, वोट देने वाले को। पर जो 60 साल से बचे थे वे अभी पता नहीं मुझे कितने महीने हुए हैं, 100-125 दिनों से उनको भी गोहत्या का पाप लग रहा है, क्योंकि गोहत्या तो जारी है और उन्होंने उनको तो वोट दिया ही है कि ये लोग आएंगे तो गोवध बंद होगा। तो इनको भी सौ-सवा सौ दिनों से गोवध का पाप लग रहा है। आप बुरा न मानें, अन्यथा न माने, पता नहीं प्राण कितने दिन रहेंगे, थोड़े दिन रहेंगे या लंबे रहेंगे हम

कुछ कह नहीं सकते अपनी, पर एक ऐसी व्यथा है कि हो सकता है, बाद में आप देख लेना डॉक्टर हैं आप, मानसिक बीमारी भी हो सकती है, पर ऐसा लग रहा है कि यह इस तरह की स्थिति चली जो हो रहा है अभी जिस तरह से तो प्रत्येक व्यक्ति के सामने देखने की हिम्मत नहीं पड़ती है, थोड़ी-थोड़ी देर में बुखार आ रहा है, कभी ठण्ड लग रही है, कभी गर्मी लग रही है, कभी पसीना आ रहा है।

कहने का भाव यह है कि भारत के प्रत्येक बालिग व्यक्ति के आंखों में हमको गोहत्या का पाप दिखता है। 3-4 महीने पहले हमें पवित्र आँखों के दर्शन होते थे, पर अब मत देने वाला, वोट देने वाला कोई भी व्यक्ति उस पाप से रहित नहीं रहा। इसलिए हम कुछ कह नहीं पाते। लोग कहते हैं कि इनको अहंकार है। अहंकार किस बात का हो? हमारे पास कुछ है ही नहीं। हम विद्वान है नहीं, सिद्ध है नहीं, हमारे पास कोई शिष्य मंडली है नहीं, कोई परंपरा है नहीं, कोई मठ है नहीं। हमारे पास जो बल है वह संतों के सद्भावना का बल है, गोमाता की उस करुणा का बल है और सबसे बड़ा बल विश्वास का है। इस विश्वास का कि गोसेवा का कार्य स्वयं भगवान गोविंद करते हैं, हम तो हमारे निर्वाह का भी कार्य नहीं कर सकते तब तो साधु बने। कुछ कर सकते तो साधु क्यों बनते। सभी लोग देखो सेवा कर रहे हैं, दान दे रहे हैं और हम कुछ नहीं कर पाते हैं। हम अपना खुद का पेट नहीं भर सकते थे तब हम साधु बने। हमारा तो गोमाता के आश्रम में रहने से पेट में कुछ मिल रहा है।

यथार्थ बात है कि आज हमको निकाले और कोई लोग कहे कि जाओ बाबा यह गाय और तुम सेवा कर लो। तो हम कुछ नहीं कर सकते। हमारी कोई जमीन है क्या, हमारा कोई खेत है क्या, दुकान है क्या, मठ-मंदिर है क्या, कुटिया है कहीं भी क्या? इस दुनिया में सारे दृश्य वर्ग में एक रंच मात्र हमारी करके कोई चीज नहीं है। वैचारिक बात नहीं, यथार्थ बात है, व्यावहारिक बात है, खोज कर लें कहीं रंच मात्र भी अपना कुछ नहीं है। वैचारिक बात तो है ही कि इस दुनिया में हमारा कुछ नहीं है,पर व्यावहारिक बात है कि हमारा अपना कुछ नहीं है। न कोई हमारा शिष्य है, गुरु तो सब हैं, यहाँ विराजे है। मित्र तो है। भगवान के नाते सब हमारे मित्र हैं, हमारे हैं। हमारे साथ मिलकर जो कार्य करें संत वे हमारे मित्र हैं और हमसे बड़े हैं और हमारा मार्गदर्शन और सहयोग करते हैं वे गुरु है सब। जब हम कभी भी अपनी ओर देखते हैं तो एक रत्ती मात्र भी योग्यता नहीं पाते हैं।

यह बात हम इसलिए नहीं कह रहे हैं कि हम दीनता बताएं तो हमारी और बड़ाई हो, पर अभी हमारे कानों में ऐसी बातें आ रही है सुनने को कि देश में बड़े-बड़े लोग ऐसा कह रहे हैं कि ये लोग अहंकारी हैं, ये जिद कर रहे हैं, इनको अहंकार आ गया कि हमने लाखों गाएं पाली, यह कर लिया, वो कर लिया। हमको गाय की पीड़ा की व्यथा है, इसलिये कहते हैं, हमको किस बात का अहंकार? चलो नहीं कहेंगे ऐसी बातें। अब तक चले हम संतों के सहारे ही है और आगे भी गोसेवा का कार्य जब तक संत कहेंगे तब तक करेंगे, उनके बीचमें ही रहेंगे।

निराशा हमको इस बात की हो रही है कि हमको कहते हैं कि साल 2 साल हो जाय तो कुछ करें। हम कह रहे हैं कि जिन-जिन प्रांतों में अनुकूल सरकारें हैं उन प्रांतों से कार्य शुरू करें, समाधान की ओर बढ़े, समाधान कहाँ से हो वहाँ से करें। अब हमारे पास 3 दिन पहले संदेश लेकर आये कि भारत में मांस निर्यात पर शीघ्र ही प्रतिबंध लग जायेगा, शुभ संदेश दे रहे हैं कि भारत सरकार इसमें सहमत हो गई है। 60 साल में आज तक कोई ऐसा शासक नहीं आया जिसने मांस निर्यात पर प्रतिबंध लगाया हो और अभी जो शासन आया है वह ऐसा विचार कर रहा है तो यह बहुत बड़ी प्रशंसा की बात है और आप

बताएं हमारे जो वेदना है उसका क्या समाधान है? आप बाहर मांस नहीं भेजेंगे तो भारत के जो मांसाहारी है उनके लिए मांस सस्ता हो जाएगा, यह उनके लिए सुविधा हो जाएगी और वे प्रसन्न हो जाएंगे आप पर। इसके अलावा आप बताओ क्या होगा? बोले मांस बाहर नहीं जाएगा तो फिर गोवध नहीं होगा। पर यहाँ इतने मांसभक्षी लोग हैं, आपके मांस निर्यात पर प्रतिबंध लगाने वाला जो स्थान है उसमें भी 80 प्रतिशत लोग इस तरह के होंगे तो ऐसे में हम कैसे कह देंगे कि गोवध बंद हो जायेगा और कटने के बाहर नहीं जायेगा यह कोई समझदारी है क्या?

हम तो कह रहे हैं गाय जहाँ से निकल रही है, वहाँ से न निकले ऐसा समाधान करिये और ऐसा समाधान है। अगर भारत के किसान के लिये एक नीति बन जाय, कि भारत के किसान की संपूर्ण कृषि, नहीं तो 50 प्रतिशत कृषि जैविक हो जाय। आज हमें यह कहना पड़ा है नहीं तो हम तो संपूर्ण कृषि की बात करेंगे पर 50 प्रतिशत कृषि भूमि जैविक होगी, किसान एक एकड़ पर निश्चित संख्या में गोवंश रखेगा ऐसी व्यवस्था सरकार की नीति में भी हो जाय और गोवंश आधारित कृषि करने वाले किसान को विशेष रूप से प्रोत्साहित किया जाए। हम बता नहीं सकते योजनाएं,वह शासकों का काम है। किसान के उत्पादन को समर्थित मूल्य पर खरीदा जाए क्योंकि गाय के गोबर गोमूत्र से उत्पादित वस्तु गुणवत्ता की दृष्टि से फर्टिलाइजर और कीटनाशक से उत्पादित वस्तुओं से हजारों गुना श्रेष्ठ है। इसलिए उनका मूल्य चाहे जितना दे सकते हैं और शासन चाहे तो देश और दुनिया में ऐसा जैविक बाजार मार्केट स्थापित कर सकती है जिसकी आवश्यकता पूरी दुनिया महसूस कर रही है। इस तरह काम करके भारतीय गायों को जो दूध नहीं देती है संरक्षित किया जा सकता है। यह बार-बार यह बात आ रही है कि अगर साधु संत कहते हैं उस तरह से गोवंश को रोका जाएगा तो उनके लिए चारा कहाँ से आएगा? उनको रखेंगे कहाँ? इकोनोमिक प्रॉब्लम खड़ी हो जाएगी ऐसा अधिकारी लोग शासकों को समझाते हैं। इस कारण यह वहीं (कत्लखाने) जाए और बढ़िया दूध देने वाला रहे। यह ठीक बात है कि अच्छी होनी चाहिये पर गायों की नस्ल आपकी लापरवाही के कारण बिगड़ी है, उसका नस्ल सुधार करना है, पर जो गोवंश हमारे सामने हैं, दूध नहीं दे सकता, बुढ़ा है या नर है वह कटे और हम केवल दूध वाली गायों को खिलाने पिलाते रहें, मोटी करते रहें 10 प्रतिशत गाय को यह हमारा काम नहीं है, यह तो व्यापारियों का काम है वह करें और करते भी हैं। हम तो कहते हैं कि एक भी गाय की हत्या न हो, तत्काल बंद हो।

हमको आप माइक मत दीजिए, यह हमारी आपसे प्रार्थना है। हम सुनेंगे और दर्शन करेंगे और आप लोगों के हाथ में हैं, आप चाहेंगे तो सब हो सकता है। जिनकी हमने चर्चा की कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ हमारे हिंदुत्व विचारधारा का बहुत बड़ा संगठन है और उसका प्रभाव शासन पर है। उनका साथ लेकर, डाक्टर साहब के मित्र हैं उनके जन्म भूमि के पूर्व आश्रम के साथी भी हैं प्रधानमंत्री जी, तो प्रधानमंत्री से भी पहले स्वतंत्र रूप से बात करें और अन्य संत भी संघ के प्रमुख जो हैं उनसे बात करें और वे भी प्रधानमंत्री जी को कहें। डॉक्टर साहब भी संघ प्रमुख को कहें जल्दी से जल्दी गाय का काम हो और उससे पहले राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात में आज हो सकता है, संकल्पित कार्य पड़े अब हम बोलेंगे नहीं बोलेंगे और अधिक समय होगा। जो कुछ अन्यथा कहा हो भावावेश में उसके लिए हम क्षमा चाहते हैं और जो कुछ रह गया है वह सब अपनी कथा में समाज को कहने के लिये पूज्य व्यास जी से निवेदन करते है। इन्हीं शब्दों और भावों के साथ में हम अपनी वाणी को इन आचार्यों के चरणों में अर्पित करते हैं। जय गोमाता, जय गोपाल !

बहुत ही उत्तम है नंदी कीसेवा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

भगवान दो कामों से ज्यादा प्रसन्न होते हैं- एक संत सेवा और दूसरी सांडों की सेवा। सांड सेवा यानि कि नंदी की सेवा, वृषभ सेवा। इससे ठाकुर जी ज्यादा राजी होते हैं, ज्यादा प्रसन्न होते हैं तो हमने उनको कहा कि संत सांड ही है। संत भगवान बुरा मत मानना। भक्तमाल में तो इस प्रकार की कथा है।

टोंक के पास टोडे रियासत है, वहां पीपाजी महाराज विराज रहे थे। लाखा बंजारा को अच्छी प्रजाति के बैलों की आवश्यकता थी। कुछ बंजारों को लेकर वह आसपास के क्षेत्र में घूम रहा था और कुछ ईर्ष्यालु लोगों ने उस बंजारे को भड़का दिया- अरे बोले यहाँ कहीं बैल नहीं मिलेंगे जैसा आप चाहते हो, पीपाजी महाराज बहुत बड़े बैलों के व्यापारी है, हैं तो वे विरक्त महात्मा पर ऊँचे व्यापारी है बैलों के पर जल्दी देते नहीं है बैल। तुम्हारे पास जितना रुपया पैसा हो ढ़ेर लगा देना उनके सामने और वे कितना भी मना करे, मानना नहीं, चरण पकड़ लेना, रोने लग जाना, वे देख नहीं पाएंगे। एक से एक बढ़िया बैल है उनके पास। उन दुष्टों की योजना थी कि बंजारे बड़े संगठित होते हैं, पैसा तो वे जबरदस्ती दे ही देंगे। बैल वे दे नहीं पायेंगे जिससे बंजारे उनसे झगड़ा करके भगा देंगे यहाँ से।

अब वे बंजारे पीपाजी महाराज के पास गये और जाकर धन का ढ़ेर लगा दिया व पीपाजी से प्रार्थना करने लगे। पीपाजी ने कहा- किसी ने तुम्हें बहका दिया है हम साधु हैं भगवान की कृपा से आकाश व्रती से निर्वाह करते हैं। हम कोई व्यापारी नहीं है। बहुत मना किया, अनेक प्रकार से समझाया पर जैसे हुण्डी वाले संत नहीं समझ रहे थे, ऐसे ही वे बंजारे जो है समझने के लिए तैयार नहीं थे, सुनने के लिए तैयार नहीं थे। उन्होंने सोने की मोहरों की थेली सामने खोल दी, बोले महाराज इन पैसों का बढ़िया-बढ़िया बैल चाहिये, बाकी हम कुछ नहीं जानते हैं। पीपाजी ने विचार किया कि संत तो आते-जाते रहते हैं, उनको प्रसाद तो करवाना ही है। भगवत इच्छा से इस समय अपने पास एक फूटी कौड़ी भी स्थान में नहीं है। चलो रामजी देते हैं तो छप्पर फाड़ के देते हैं। रामजी ने व्यवस्था की है तो इसे अब स्वीकार करना चाहिये। आगे जैसी रामजी की इच्छा होगी वैसा होगा। बंजारे ने कहा महाराज हम बैल लेने कब आयें? महाराज जी ने यह सोचकर कि जब मना कर रहे हैं तो भी नहीं मान रहा है तो कहा कल दिन में 12 बजे आ जाना। अभी हमारे बैल चरने गये हैं।

चारों दिशाओं में महाराज जी ने न्यौता फिरा दिया। सैंकड़ों, हजार-दो हजार संत आ गए। सब प्रेम से पा रहे हैं। सुन्दर रसोई बनी, पैसा तो खूब आ ही गया था। खूब बढ़िया चकाचक। कारी रोटी धोरी धार बनी है। खूब चकाचक रसोई बनी। ठाकुर जी को भोग लगा। संत सब सिया हरि नारायण गोविंद करने लगे संतो। पीपाजी ने ठाकुर जी से प्रार्थना की- प्रभु इन बंजारों का अन्न आपने प्रेम पूर्वक आरोगा है बंजारे मांगेंगे तो हमारे पास और कुछ देने के लिए तो है नहीं। आप इनकी बुद्धि को शुद्ध करें। उनके हृदय में अपने प्रेम को प्रकट करें। ठाकुर सेवा संत सेवा के प्रति इनका अनुराग हो जाए क्योंकि साधुओं की कहावत है जिसका चूण उसका पुन, साधु को पाप न पुन। इनका सब चूण है, इन्हीं को संपूर्ण पुण्य मिलने वाला है ऐसी प्रार्थना की, आप तो कृपा करना बस। प्रार्थना से उनकी बुद्धि शुद्ध हो गई और वे सब आए तो उन्होंने देखा भण्डारा चल रहा है, हजारों संत प्रसाद पा रहे हैं। महाराज बैल कहाँ है? बोले यही बैल है सब, रामजी के बैल हैं। इधर-उधर चरने को गये थे, अब आये है अपने स्थान में। आपको जितने की आवश्यकता है छांटकर इनमें से ले जाओ, जीवन भर सेवा करो। वे बहुत प्रसन्न हो गये, बुद्धि शुद्ध हो गई थी ना। बोले महाराज इन सब रामजी के बैलोंको

एक-एक पीतांबरी उढ़ाने की इच्छा हो रही है हमको। दक्षिणा देने की हमारी इच्छा हो रही है। खूब साधुवाद, आप खूब दक्षिणा दीजिये। नेकी और पूछ पूछ?

अच्छे से दक्षिणा दिया उन्होंने, बड़े प्रसन्न हुए बोले महाराज जी जीवन में कभी सत्कर्म नहीं बना आपने बड़ी कृपा की, लेकिन एक बात समझ में नहीं आई कि आपने संतों को बैल क्यों कहा? वृषभ क्यों कहा? सांड क्यों कहा? महाराज जी ने कहा वृषभ धर्म का स्वरूप है और ये जो संत हैं ये परम धर्म के स्वरूप हैं। वैष्णव धर्म का पालन करने वाले ये सभी यतिवृन्द, ये सभी महापुरुष परम धर्म का स्वरूप है। इसलिए सब वृषभ ही हैं। ये साक्षात् परम धर्म का स्वरूप है तो इन्होंने, अनिरुद्ध दास जी महाराज ने कहा है कि यह हमारा स्वयं का अनुभव है और अनेकों बार प्रयोग करके देखा है कि नंदियों की सेवा भगवान को अत्यंत प्रिय है। क्योंकि उत्तम गोवंश की वृद्धि इन्हीं के द्वारा होती है।

इसलिए हमारे शास्त्रों में लिखा है कि एक वृषभ का दान 10 गायों के दान के बराबर है। 10 गायों का दान करो चाहे एक उत्तम प्रजाति के वृषभ का दान करो। 10 गायों के दान का पुण्य एक उत्तम नंदी के दान से प्राप्त हो जाता है। ऐसा हमारे धर्म ग्रंथो में लिखा हुआ है तो इन्होंने लिखा है कि सात प्रकार के अन्न गेहूं, जौ, बाजरा, मक्का, ज्वार, चना इनमें से कोई पांच अन्न लें उसमें थोड़ा काला तिल और काला उड़द मिला दें कुल मिलाकर सात प्रकार के अनाज उनकी मात्रा चाहे 11 किलो हो 21 किलो 31 किलो अथवा भगवान ने समर्थ किया हो तो 1 किलो 1 क्विंटल हो अपनी सामर्थ्य के अनुसार इसका दलिया पिसवा करके एक चौथाई भाग गुड़िया शक्कर उसमें मिला ले जैसे मान लो एक क्विंटल यह सब दलिया है उसमें 25 किलो जो है चीनी या गुड़ मिला लें और बढ़िया से दलिया बनाकर परात में रख करके उसमें तुलसीदल पधराकर मन ही मन भगवान को अर्पित करें और उसकी 4 प्रदक्षिणा करें और तुलसीदल जिस व्यक्ति के निमित्त उसके संकट की निवृत्ति के लिए दान करना है या तो उसको तुलसी दल पवा दें अथवा जो व्यक्ति उपस्थित है वही तुलसीदल लेकर के मन ही मन संकल्प करें कि उसको व्यक्ति को लाभ मिल जाए और फिर सांडों को पवावे। एक सांड को सवा किलो से अधिक नहीं पवाना चाहिए क्योंकि सवा किलो से ज्यादा पवाने से नंदियों का स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

उसी हिसाब से चाहे तो दलवा के रख लो और रोज-रोज एक नंदी को खिला दें या फिर एक साथ जहाँ अधिक नंदी हो उनको सबको एक साथ परोस के जिमा दो तो तत्काल बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान हो जाता है। चाहे कोई असाध्य रोग हो वही समाप्त हो जाएगा, संतान की प्राप्ति की कामना हो तो वह भी पूर्ण हो जाएगी, कन्या के विवाह की कामना हो तो वह भी पूर्ण हो जाएगी, पुत्र के विवाह की कामना हो तो वह भी पूर्ण हो जाएगी, नौकरी धंधा पाने की कामना हो तो वह भी पूरी हो जाएगी और कोई व्यापार में बहुत बड़ा नुकसान है तो उसकी कामना की पूर्ति भी हो जाएगी, भरपाई हो जाएगी।

ऐसा कल उन्होंने बताया तो हमने कहा इसको आप लिखकर दे देना तो लोगों को लाभ मिल जाएगा और नर गोवंश की सेवा हो जाएगी, तो यह उन्होंने लिखकर दे दिया और हमने आपको उसका भाव सुना दिया। तो आप चाहे तो भगवत कृपा से नंदी बाबाओं और गोमाताओं की सेवा करके पुण्य लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

दो मुठ्ठी घास से पितृ संतुष्ट

ऋण लेकर देव कार्य सम्पन्न किये जा सकते हैं, पितृ कार्य में ऋण लेना वर्जित है। पितृ कार्य ऋण लेकर सम्पादित नहीं करना चाहिये। ऐसी स्थिति हो कि घर में खाने को कुछ नहीं हो तो दो मुठ्ठी घास लेकर गाय को खिला दे और दक्षिण दिशा की और रोकर पितरों को कहे कि मेरे पास देने के लिये कुछ नहीं है, इतने में ही हमारे पितृ संतुष्ट हो जायेगें।

गोसेवा-गोमहिमा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

(१)

ब्रह्माजी ने कहा-हे इंद्र! गोमाता ही यज्ञ है, यज्ञांग है। बिना गोमाता के यज्ञ संभव नहीं है। गोमाता ही संपूर्ण प्रजा को धारण करती है और संपूर्ण प्रजा का पोषण करती है। दूध, दही, घृत और पंचगव्य आदि देकर दीर्घ आयु, निरोग और पुष्ट बनाती है। उसके पुत्र वत्स माने बछड़े, बैल, वृषभ अपने परिश्रम से खेत जोतकर अन्न उत्पन्न करते हैं और एक विशेष बात महाभारत में लिखी है वो यह है कि कमल पुष्प, गुग्गल और बिल्लव ये तीनों अत्यंत पवित्र वस्तुएं हैं और ये तीनों गोमाता से ही उत्पन्न हुए हैं। कमल और बिल्लव गोमाता के गोमय से और गुग्गल गोमूत्र से उत्पन्न हुए है।

गोमाता की कृपा से आपके हव्य-कव्य मय यज्ञ और श्राद्ध संपन्न होते हैं। मुनियों की आध यात्मिक साधना का आधार गोमाता है और देवताओं का पोषण भी गाय के द्वारा होता है, प्रजा का पोषण भी गाय के द्वारा होता है और गायों की प्रसन्नता से देश की समृद्धि निरंतर बढ़ती चली जाती है यह बात ब्रह्मा जी कह रहे हैं। गोएं प्रसन्न होगी तो राष्ट्र निरंतर समृद्ध होता चला जायेगा।

हे देवराज इंद्र! दिव्य, पवित्र गुणों के कारण ये गाएं ब्रह्मलोक से भी ऊपर गोलोक धाम में प्रतिष्ठित हैं और इस संबंध में है देवराज इंद्र! मैं तुम्हें एक इतिहास सुनाता हूं। एक बार देवमाता अदिति ने अपने पुत्रों की पराजय से दु:खी होकर उनके उत्कर्ष के लिए कैलाश पर्वत के शिखर पर एक पैर से खड़े होकर के 11000 वर्ष तक तप किया और उनके साथ सुरभि गोमाता ने भी एक चरण से खड़े होकर के 11000 वर्ष केवल वायु का आहार करते हुए तक तप किया। इस तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान श्री नारायण के साथ भगवान शिव और हम यानि ब्रह्मा विष्णु महेश हम तीनों देवता अदिति माता और सुरभि गोमाता दोनों को वरदान देने के लिए गए तो माता अदिति ने तो अपने पुत्रों के उत्कर्ष का वरदान मांगा कि हमारे पुत्रों का दु:ख दूर हो जाए और वह अपने स्वर्ग के राज्य पर प्रतिष्ठित हो जाए उनका खूब उत्कर्ष उनकी महिमा बढ़े। भगवान ने अदिति माता से कहा कि वामन अवतार धारण करके मैं तुम्हारे पुत्रों का वैभव पुन: प्राप्त कराऊंगा। यह आश्वासन भगवान ने अदिति माता को दिया।

अब तीनों देवताओं ने सुरभि से वरदान मांगने के लिए कहा तो सुरभि ने कहा हे देवाधिदेवो! हमने किसी कामना से तपस्या नहीं की है। हमने तो अत्यन्त निष्काम भाव से तपस्या की है, बस मैं तो निरंतर आपकी प्रसन्नता चाहती हूं। हे नारायण! हे प्रभु! मैं आपकी कृपा, आपकी प्रसन्नता चाहती हूं। यह सुनकर के तीनों देवों ने गोमाता को प्रणाम किया और सुरभि गाय से कहा कि हम तुम्हें अमृत प्रदान करते हैं। महाप्रलय काल में भी हे सुरभि गोमाता! तुम्हारा नाश नहीं होगा और जहाँ कि हम ब्रह्मा का ब्रह्मलोक, विष्णु का बैकुंठ लोक और शिवजी का शिवलोक हम तीनों देवताओं के लोक के ऊपर तुम्हारा गोलोक प्रकट हो जायेगा।

उस गोलोक की अधीष्ठात्री तुम ही रहोगी, वहाँ भगवान राधा-कृष्ण अपना निरंतर रास विलास करेंगे और तुम गोलोक धाम की स्वामिनी मानी जाओगी। उस गोलोक धाम का वर्णन नहीं किया जा सकता है, साक्षात सच्चिदानंद भगवान ही गोलोक धाम के रूप में प्रकट हैं और स्वयं प्रकाशित है। बड़े-बड़े सींगों वाली आप वहाँ निवास करोगी और वहाँ के नदी, बाबड़ी, पर्वत, वन-उपवन सब दिव्य हैं। उस गोलोक धाम में विशाल भवन बने हुए हैं, सारे भोग पदार्थो से परिपूर्ण है वह। असंख्य गायों के बीच में नित्य भगवान शिव नील वृषभ के रूप में विचरण करते हैं और भगवान श्री कृष्ण अपने

सखाओं और गोपियों के साथ और अपनी प्राण वल्लभा हृदेश्वरी राजेश्वरी परमेश्वरी श्री राधारानी के साथ वह नित्य विहार करते हैं, नित्य रास करते हैं। हे इंद्र! वह त्रिपादी लोक है। एक पाद में सारा ब्रह्मांड है, दूसरे पाद में हम सबके लोग हैं और तीसरे पाद में भगवान का दिव्य धाम गोलोक है। तीन पाद का अर्थ है उसकी कोई सीमा नहीं होती है, असीम है गोलोक। उस लोक में परम परोपकारी, धर्मात्मा सत्यवादी, माता-पिता, गुरु ,गोविंद, गाय, तुलसी और संतों की उपासना करने वाले, आदर करने वाले लोग ही प्रवेश पाते हैं। बोलिये सुरभि गोमाता की जय।

(२)

इतना काम प्रत्येक मनुष्य कर सकता है, आस्तिक मनुष्य कर सकता है। नित्य प्रति गोरक्षा के लिए भगवान से प्रार्थना करे। हे प्रभु! वैदिक सनातन धर्म का मूल गाय है। गाय के रक्षित होने से ही धर्म रक्षित होगा, राष्ट्र सुरक्षित होगा, संपूर्ण सभ्यता सुरक्षित होगी। इसलिए, हे भगवान ! ऐसी आप कृपा करुणा करें कि गोवंश की सुरक्षा, गोवंशका संरक्षण, संवर्धन हो! हे प्रभु! भारतवर्ष की धरती गोवध के कलंक से मुक्त हो जाए, भारत क्या पूरे संसार गोवध के कलंक से मुक्त हो जाए, सारी धरती पर गोरज बिछ जाए गोबर-गोमूत्र से धरती सुभाषित हो जाए, दूध दही की नदियां फिर से बहने लग जाए। यह प्रार्थना हम लोग नित्य प्रति भगवान से करें। कुछ नहीं तो अपने इष्ट मंत्र की चार माला जप करके गोरक्षा की नित्य प्रति प्रार्थना करें। भगवान की कृपा से हजारों की संख्या में लोग चार-चार माला गोरक्षा के लिए जप रहे हैं इस समय देश में। दास तो शरणागति के समय पक्का करवा देता है। ज्यादा नियम नहीं बताते हैं ज्यादा नियम लोगों से होगा नहीं तो फिर 21 माला का नियम सबको बताते हैं। 10 माला मूल मंत्र की, 4 माला मूल मंत्र की जाप करके गोरक्षा के लिये अर्पित करना, 5 माला श्रीजानकीजी के मंत्र की और 1 माला शरणागति मंत्र, 1 माला चरम मंत्र का संक्षिप्त रूप। तो कुल मिलाकर 21 माला के जप में अधिक से अधिक आधा घंटे का समय लगता है और इस नियम को बहुत बड़ी संख्या में लोग पालन कर रहे हैं। उसका प्रभाव दिखाई भी पड़ रहा है।

दूसरा उपाय है- स्वयं वेदलक्षणा भारतीय गायों के गव्य पदार्थो के आहार की प्रतिज्ञा। हम गव्य पदार्थो के द्वारा, वेदलक्षणा भारतीय देसी गायों के ही दूध, दही, घृत आदि से अपना देवर्चन संपन्न करेंगे घर में भगवान राजभोग की सेवा संपन्न करेंगे, पितरों के श्राद्धादि संपादित करेंगे और स्वयं के आहार के रूप में गव्य पदार्थ ही ग्रहण करेंगे। यह निश्चय भी गोरक्षा और गोसेवा का उत्तम प्रकार है, क्योंकि जब आप ऐसा निश्चय करेंगे तो आपको उस वस्तु की आवश्यकता अनुभव होगी और उस आवश्यकता की पूर्ति हेतु बड़ी संख्या में गोपालन होगा।

तीसरा प्रकार है- हम यह विचार करें कि हमारे जीवन का एक दिन भी ऐसा व्यतीत ना हो जिसमें किसी न किसी प्रकार से हम गोसेवा न करें। कितनी बढ़िया बात शास्त्री जी ने बताई कि घर में गोग्रास की गुल्लक रखें और अधिक समर्थ नहीं तो बड़े लोग 10-10 रुपया डालें बच्चे एक-एक रुपया डालें। उससे उनका कुछ न कुछ देने का संस्कार बनेगा। अगर हमने गोग्रास अर्पित नहीं किया तो हम ग्रास लेने के अधिकारी नहीं है। हमने कई गोभक्त परिवारों में देखा है वे भोजन करने से पहले अपने घर पर गुल्लक में 100-100 रुपये अर्पित करते हैं। जब यह राशि एकत्रित हो जाय तब निकट की गोशाला में अर्पित कर दें या चारा, दवाई आदि अर्पित कर दें। पैसा न हो तो निकट की गौशाला में जाकर कुछ क्रियात्मक, प्रयोगात्मक, सृजनात्मक, रचनात्मक आदि किसी न किसी प्रकार से हम प्रतिदिन गोसेवा करें। ज्यादा कुछ नहीं कर सकते हैं तो गोसेवा संबंधी विचारों का आदान-प्रदान करके लोगों को प्रेरित करके हम प्रत्यक्ष रूप से गोसेवा से जुड़ सकते हैं।

गीता ज्ञान

पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज

पिछले अंक से आगे .....

माद्री ने कुन्ती से मंत्र शक्ति सीखकर दोनों जुड़वा भाई अश्विनी कुमारों का स्मरण किया तो उसे नकुल और सहदेव नाम से दो जुड़वा पुत्र प्राप्त किये। ये ही पांच पांडव हैं। युधिष्ठर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव। आज हम पांच पांडवों के बारे में अनुशीलन करेंगे। दुर्योधन वह है जिसके साथ युद्ध करना कष्टदायक है, सहज नहीं है। युधिष्ठिर कौन है? युद्ध में अविचल है, स्थिर है वह युधिष्ठिर है। युधिष्ठिर बहुत शांत है, जो गाली देता है, उस पर भी क्रोध नहीं करते हैं, हंसते हैं।

एक कहानी है युधिष्ठिर के ऊपर। आचार्य द्रौण पढ़ा रहे हैं। सौ कौरव, पांच पांडव, अश्वत्थामा आदि बैठे हैं। क्या पढ़ा रहे हैं कि क्रोध करना ठीक नहीं है। क्रोध मनुष्य का शत्रु है। याद रखो क्रोध करना ठीक नहीं है। दूसरे दिन द्रौण पूछते हैं- बताओ! युधिष्ठिर खड़े हो जाओ, कल हमने क्या पढ़ाया था? युधिष्ठिर चुपचाप खड़े रहे कुछ नहीं बोले। कल इतनी बार बोला, समझाया फिर भी याद नहीं है? फिर भी कुछ नहीं बोले युधिष्ठिर। दुर्योधन तुम खड़े हो जाओ, बताओ कल क्या पढ़ाया था? बोले आपने कहा था- क्रोध मत करो। द्रौण बोले- युधिष्ठिर याद आया कल हमने क्या बोला था? फिर वह चुप हो गए कुछ नहीं बोल रहे हैं। तो द्रौण ने नाराज होकर डांट लगाई। अब युधिष्ठिर बोले आचार्य भगवान अभी थोड़ा-थोड़ा याद है? क्या याद है? यही कि कल आपने पढ़ाया था कि क्रोध मत करो। आचार्य द्रोण बोले- इतना सरल वाक्य बताया था कल कि क्रोध मत करो, फिर आपको याद कैसे नहीं? तो युधिष्ठिर ने कहा कि मैं तो देख रहा था कि आप जब गाली देंगे तब मुझे क्रोध आता है कि नहीं? युधिष्ठिर ने कहा कि मैं देख रहा था कि बाहर से तो हमने यह वाक्य अच्छी तरह से याद कर लिया लेकिन भीतर में क्रोध आता है कि नहीं आता है? शास्त्र को पढ़ लेना, स्मरण कर लेना और उस पर प्रवचन करना इतनी बड़ी बात नहीं है, शास्त्र को अनुभव करना अपने जीवन में उतारना वही बड़ी बात है। उसी की जरूरत है, नहीं तो बोलने वाले तो बहुत है।

हमारी परंपरा के योगीराज लाहिड़ी महाराज बोलते थे- पोथी मेरी थोथी, चार वेद पढ़े मजूर, कथनी के लोग बहुत है करनी के अति दूर। गुरुदेव बोलते थे अभ्यास करो अभ्यास करो अभ्यास करो। अभ्यास करने से ही सिद्धि मिलती है। कबीरदास जी कहते थे- हरदम लगे रहो रे भाई, भनक मन लग जायेगी तेरी। श्वास दर श्वास लगे रहे कभी तो आपकी भनक ईश्वर को लगेगी ही।

युधिष्ठिर जो स्थिर रहता है। युधिष्ठिर का स्थान विशुद्ध चक्र में है। कल हम बोले थे पांच तत्वों का स्थान पांच चक्र में है। विशुद्ध चक्र स्थिर है तो इसमें आकाश तत्व है, क्योंकि आकाश तत्व स्थिर है। तो युधिष्ठिर का स्थान कहां है आकाश में।

अब आ जाइए भीम जी के पास। हमारे दो प्रमाणिक इतिहास ग्रंथ है। एक रामायण और दूसरा महाभारत। दोनों में एक एक चरित्र समान है। रामायण में अंजनी पुत्र हनुमान जी और महाभारत में कुन्ती पुत्र भीमसेन। ये दोनों वायु पुत्र है। हनुमान जी का स्थान है हृदय में और भीमसेन जी का स्थान भी है हृदय में। हृदय वायु क्षेत्र है। देखो श्वास नियंत्रित करने से हृदय में शक्ति आ जाती है। व्यक्ति का जीवन ही वायु है, श्वास है। आप देखिए हाथी की उम्र कितनी है, कछुए की उम्र कितनी है, कुत्ते की उम्र कितनी है, यह वैज्ञानिक तत्व है। हाथी 1 मिनट में कितना श्वास लेता है, कछुआ 1 मिनट में कितना

श्वास लेता है, कुत्ता 1 मिनट में कितना श्वास लेता है? श्वास के ऊपर व्यक्ति की आयु निर्भर करती है। प्राचीन काल में ऋषि मुनि योगी इतने साल जीते थे क्यों? क्योंकि वे योगबल से श्वास को स्थिर कर देते थे। प्राचीन काल ही क्यों अभी 100-200 साल में कई महापुरुष हुए हैं जैसे देवराह बाबा, पुरी में रहने वाले नंगे बाबा तोतापुरी जी महाराज, हमारे क्रिया योग के पूज्य बाबा जी महाराज जो बहुत लम्बी उम्र जिये। श्वास का नियंत्रण करो। श्वास का नियंत्रण करने से शरीर में शक्ति आती है।

हम एक उदाहरण देते हैं, जब आप एक भारी वस्तु को उठाते हैं तो उस समय आपका श्वास क्या है मालूम है? उस समय आपका श्वास बंद हो जाता है, एक बार के लिए रुक जाता है क्यों? किसी ने कहा नहीं है श्वास रोकने के लिये, अपने आप रुक जाता है क्योंकि कुंभक करने से शरीर में बल बढ़ जाता है इसलिए श्वास अपने आप रुक जाता है जब हम भारी वजन उठाते हैं। इसलिए वायु पुत्र हनुमानजी और वायु पुत्र भीमसेनजी दोनों बलवान है। महाभारत के युद्ध में सौ कौरवों को किसने मारा? दुशासन हो या दुर्योधन सबको किसने मारा? एक कौरव को भी न युधिष्ठिर ने मारा और न ही अर्जुन ने मारा, केवल एक अकेले व्यक्ति ने सौ कौरवों को मार गिराया और वह है भीमसेन।

यहाँ एक बात है, कौरव शत पुत्र है। शत पुत्र क्या है? मन की वृत्तीयों है। पांच पांडव बुद्धि की वृतियों है, बुद्धि के पांच पुत्र हैं। पांच पांडव निश्चयात्मक बुद्धि है। तो श्वास नियंत्रण से मन के विकार नष्ट होते हैं। भगवद्‌गीताजी के महात्म्य में लिखा हुआ है- जो गीताजी का स्वाध्याय रोज करते हैं, गीताजी का जीवन में प्रयोग करते हैं और रोज प्राणायाम करते हैं उनके जन्मजन्मान्तर के पाप नष्ट हो जायेंगे। श्वास पर नियंत्रण करो।

हमारे पूज्य गुरुदेव बोलते थे अंग्रेजी में - ब्रीथ कंट्रोल इट्स सेल्फ कंट्रोल, ब्रीथ मास्टरी, इट्स सेल्फ मास्टरी, ब्रीथलेस स्टेज इज डेथलेस स्टेज। श्वास का नियंत्रण आत्म नियंत्रण है। श्वास का नियंत्रण मन के ऊपर प्रभुत्व है। श्वास रहित अवस्था बुद्ध अवस्था है, समाधि अवस्था है। श्वास पर नियंत्रण करो। देखिए आम स्वस्थ आदमी प्रति मिनिट 15 श्वास लेता है। एक घण्टा में 900 और 24 घण्टे में 21600 श्वास लेता है। इसे अजपा जाप बोलते हैं। जब कोई गुस्सा में हो, भय में हो, उद्वेग में हो, विशाद में हो तो श्वास की गति 15 से बढ़ जाती है। गुस्सा में यह गति 30 तक हो जाती है। कोई व्यक्ति सोता है तो श्वास की गति धीरे और 15 से कम हो जाती है और जब श्वास की गति को अपने अभ्यास से नियंत्रित करते हैं तो मन पर नियंत्रण होने लगता है। श्वास नियंत्रित होने से जीवन नियंत्रित हो जाता है। क्रियायोग में श्वास के ऊपर ज्यादा ही विचार करते हैं, अभ्यास करते हैं। क्रियायोग में सब श्वास का ही खेल है।

अभी नाभि चक्र पर आ जाओ। नाभि चक्र में अग्नि तत्व अर्जुन जी है। अर्जुन जी के नाम का शब्द बड़ा सुन्दर है। भगवत गीता में स्वयं भगवान ने अर्जुन जी को कई नामों से पुकारा है। अर्जुन, पार्थ, कौन्तेय, गुडाकेश, धनन्जय, भारत आदि अनेक नामों से पुकारा हैं। अर्जुन नाम के बारे में थोड़ा विचार करते हैं कि क्या है अर्जुन? अर्जुन नाम में जो उकार है उसे हटा दो तो अर्जन बन जाता है। अर्जन करना मतलब प्राप्त करना। गुरुदेव बोलते थे कि हम सब संसार में आए हैं कुछ न कुछ अर्जन करने के लिए। क्या अर्जन करने के लिये? परिवार अर्जन करने के लिए, नाम यश अर्जन करने के लिए, धन अर्जन करने के लिये, कोई पाप अर्जन करता है, कोई धर्म अर्जुन करता है, कोई ज्ञान अर्जुन करता है। हमारे पूज्य गुरुदेव बोलते थे कि जो ज्ञान का अर्जन करता है वही अर्जुन है। ज्ञान कैसे होगा?

किताब पढ़ने से नहीं, प्रवचन सुनने से नहीं, क्या इससे ज्ञान होगा? हमारे गुरु परंपरा में योगीराज श्यामाशरण लाहेड़ी जी महाराज बोलते थे कि बही पढ़े तो होवे न ज्ञान, ज्ञान चाहो तो करो ध्यान।

मेरे को किसी ने पूछा कि आप कह रहे हैं कि बही पढ़ने से अर्थात पुस्तकें पढ़ने से ज्ञान नहीं होगा तो फिर आप इतनी पुस्तके क्यों लिखते हो? मैं नहीं लिख रहा हूँ। मेरे गुरुदेव ने आज्ञा दी है कि मेरे जन्मदिन पर मेरे को कम से कम 4 पुस्तके भेंट करो। तो हम गुरुदेव का काम करते हैं। जब हम गुरुदेव का काम करते हैं तब हमें अच्छा लगता है। स्वयं के लिये नहीं लिखते हैं, औरों के लिये लिखते हैं। भगवान ने समय दिया है, पुस्तक लिखने में उसका सदुपयोग हो जाता है। अच्छा लगता है। बचपन में मैंने जो गुरुदेव की वाणी लिखी थी उसको अभी कम्प्यूटर में डालता हूँ तो गुरुदेव की स्मृति हो जाती है। परमहंस योगानंदजी महाराज कहते थे पुस्तक पढ़ो यह ठीक है, मगर ध्यान करो। अधिक से अधिक अभ्यास करो। भगवान को हमेशा स्मरण करो।

गुरुदेव के साथ रहते थे उस समय की एक बात याद आ गई। आपके यहाँ है या नहीं पर बंगाल और उड़ीसा में है, दोपहर का भोजन प्रसाद लेने के बाद थोड़ा विश्राम कर लेते हैं। मेरे बचपन से आज तक कोई बड़ी बुरी आदत नहीं है, पर यह एक थोड़ी आदत है कि विश्राम कर लो। जब बचपन में हम आये तब गुरुदेव को देखा कि दिन को वे थोड़ा विश्राम कर लेते थे तो हमारी भी आदत पड़ गई। एक दिन की बात है कि थोड़ा समय जब गुरुदेव अपने कक्ष में विश्राम करने के लिये चले गये हैं तब 10-15 मिनिट विश्राम करने के बाद हम समाधि मंदिर पीछे बैठ करके एक शास्त्र था उसको पढ़ रहे थे। गुरुदेव ने खिड़की खोलकर देखा कि सब लोग विश्राम में चले गये हैं तो मेरे पास धीरे-धीरे चलकर आये। गुरुदेव के शरीर से एक सुगन्ध आती थी तो दूर से ही हमको उनके आने का आभास हो जाता था। गुरुदेव को पता था कि मैं अपने कक्ष में नहीं हूँ तो समाधि मंदिर के पीछे मिलूंगा। निकट आये मैंने दण्डवत प्रणाम किया। मेरे पास आये और बोले क्या पढ़ रहे हो? हमने कहा यह शास्त्र पढ़ते हैं। बोले जोर से पढ़कर हमें सुनाओ। हमने पढ़कर सुनाया तो बोले इतना थोड़ा-थोड़ा पढ़ो और फिर इसका ध्यान करो। गीताजी को उपन्यास की तरह पूरा मत पढ़ो। प्रतिदिन एक कागज पर एक श्लोक लिखकर जेब में रखो। इसका अभ्यास करो और फिर सोचो क्या मेरे अंदर यह बात घट गई है? ऐसे एक-एक श्लोक को जीवन में उतारो और आगे बढ़ो। पढ़ो कम, अभ्यास अधिक करो।

अर्जुन का एक अर्थ है अर्जन करना। क्या अर्जन करना? ज्ञान अर्जन करना। गुरुदेव अर्जुन का एक अर्थ और बताते थे- अ रजु न अर्थात बिना रस्सी के बंधन में होना। हम सब मुक्त है फिर भी बंधन में अनुभव करते हैं। हम सब आत्मस्वरूप हैं, शरीर नहीं है फिर भी मुक्त होने का अनुभव नहीं कर रहे हैं, इसलिये हम सब अर्जुन है। एक कहानी है- गुरुकुल में एक नया विद्यार्थी आया, आचार्य ने उसे 20 गाएं देकर जंगल में चराने भेज दिया। शाम को लौटकर जब गोष्ठ में गोओं को बांधने गया तो वहाँ 19 रस्सी थी, एक खूंटे पर रस्सी नहीं थी। सोचने लगा कि अब इस एक गोमाता को बिना रस्सी के कैसे बांधूं? इतने में आचार्य आये और बोले कि क्या हुआ बेटा? वह बोला कि गुरुदेव एक रस्सी कम है इस गोमाता को कैसे बांधु? आचार्य ने कहा कि एक प्रयोग करो। गोमाता को खूंटा के पास ले जाकर बिना रस्सी नाटक करो जैसे कि आप सचमुच में रस्सी से बांध रहे हो। विद्यार्थी ने ऐसा ही किया। फिर वह देखता है कि अन्य गायों की तरह वह भी वहाँ खड़ी चारा चरने लगी, फिर बैठकर जुगाली करने लगी जैसे बंधी हुई है.....शेष अगले अंक में

राजा नृग की कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

एक बार भगवान श्री कृष्ण अपने बाल बच्चों प्रद्युम्न, चारुभानु, साम्ब और गद आदि को लेकर एक उपवन में घूमने गए। बगीचे में खेलते-खेलते उन बालकों को प्यास लग गई तो वे आसपास पानी ढूंढ़ने लगे। पानी ढूंढते-ढूंढते उनको एक कुआं मिला। कुए में देखा तो पानी नहीं है पर बच्चों ने देखा उसमें एक विशाल जीव पड़ा हुआ था। वे उस जीव को बाहर निकालने की कोशिश करने लगे लेकिन बहुत प्रयासों के बाद जब उस जीव को कुए से बाहर निकाल न सके तो वे श्री कृष्ण के पास गये और कहा कि अपने उपवन के कुए में एक बहुत भारी और विचित्र जीव पड़ा है। भगवान ने कहा अच्छा! ऐसी बात है तो हम अभी चलते हैं। बच्चों को आप उन्हीं की भाषा में जवाब देते हैं तो वे बहुत प्रसन्न होते हैं, उन्हें आनन्द आता है। भगवान के लिए सारी सृष्टि भारी नहीं होती है, तो कुए में पड़ा एक जीव क्या भारी होगा। अच्छा लाला इतना भारी! भगवान आए और देखा, कोई लीला करनी थी, भगवान ने बाएं हाथ से जीव को बाहर निकाल दिया और निकलते ही वह चतुर्भुज रूप को प्राप्त हो गए, दिव्य रूप धारण किया। भगवान् श्रीकृष्ण के कर कमलों से उसका उद्धार हो गया। वह स्वर्ण के समान कांति लिये एक देवता के रूप में प्रकट हो गये। यह देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गये। किन्तु भगवान् श्री कृष्णजी यह सब देख कर मुस्कुरा रहे थे।

भगवान ने पूछा आप कौन हैं? क्या आप कोई देवता आदि तो नहीं है? हे सुभद्र! आपकी यह दशा क्यों हो गई यह हमको समझाइए। गिरगिट की योनि से मुक्त होने पर देव रूप को प्राप्त हुए जो राजा नृग है उन्होंने कहा- इक्ष्वाकु नाम के राजा जो श्रीरामजी के पूर्वज रहे हैं उनके कुल में हमारा जन्म हुआ। मैं इक्ष्वाकु का पुत्र नृग हूं। मैं महादानी के रूप से विख्यात था। भगवान आप हमको नहीं जानते? किसी गांव का कोई ऐसा प्रसिद्ध व्यक्ति जिसको सब जानते हो उसे हम कहें कि आप कौन है तो उसको लगेगा कि यह मुझे नहीं जानता? मैंने तो अमुक-अमुक बड़े कार्य किये हैं, गाँव का एक-एक बच्चा मुझे जानता है और यह कैसे नहीं जानता? ऐसे ही राजा नृग ने श्रीकृष्ण से कहा कि आप हमको नहीं जानते? धरती पर कोई ऐसा जीव होगा जो हमको नहीं जाने। आप तो फिर अंतर्यामी भी हैं तो जरूर जानते होंगे। अगर दानियों का नाम कभी आपके कान में आया होगा तो मेरा नाम आपके कान का स्पर्श जरूर किया होगा, मैं ऐसा महादानी पुरुष हूँ।

तो भगवान को लगा कि इसके मुख से ही सुनते हैं, क्या-क्या दान किया इसने। जीव का स्वभाव होता है प्रशंसा सुनना और अपने मुख से अपनी बड़ाई करना। देवता लोग बड़े चपल होते हैं। कोई भी दाता, धनी या बड़े उदार लोग यहाँ से स्वर्ग में जाते हैं तो उधर इंद्र उन्हें अपने पास में बिठाते हैं और फिर पूछते हैं अब बताओ आपने क्या-क्या दान किया था, क्या-क्या बड़े यज्ञ किये? जीव अपने मुख से जब अपनी ही प्रशंसा करने लगता है तो उसके पुण्य क्षीण होते जाते हैं। क्या-क्या धर्म किया, उनसे पूछते-पूछते-पूछते जब उसके पुण्य समाप्त हो जाते हैं तब उसे स्वर्ग से नीचे उतार दिया जाता है और पुनः धरती पर फेंक दिया जाता है। व्यक्ति जब अपने मुख अपनी प्रशंसा करने लगता है तो उसके पुण्य नष्ट हो जाते हैं। राजा नहुष की कथा यही तो है। राजा नहुष स्वर्ग में थे। देवताओं ने उन्हीं के मुख से कहलवाया कि उन्होंने क्या-क्या पुण्य

किया। पूछते-पूछते जब उनके पुण्य नष्ट हो गये तो उनको स्वर्ग से उतार कर धरती पर फेंक दिया।

अब भगवान नृग से पूछ रहे हैं अच्छा बताओ आपने क्या-क्या दान किया? महाराज आपको तो विदित ही होगा सारा भूमण्डल साक्षी है हमारा। धरती पर जितने धूलकण होंगे, आकाश में जितने तारे होंगे, वर्षा में जितने जल बिंदु होंगे उतनी मैंने गाएं दान की है और वो भी कोई साधारण नहीं दूध वाली, ज्योति संपन्न, कपिला, सीधी व सुन्दर सुलक्ष्णा गायों के सींगों पर सोना मढ़वा कर उनके बछड़ों के साथ वस्त्र, माला, आभूषण से अलंकृत गायें शामिल थीं। वह भी अपनी न्याय की कमाई से। ऐसा नहीं कि कहीं का आया माल हो और हमने गोदान में लगा दिया हो। कहीं का आया गया पैसा कभी दान में मत लगा देना। जिस कमाई में पसीना बहा हो, उसी धन से कोई धर्मार्जन का कार्य करना। आये गये पैसे को आये गये काम में लगाओ। कोई एकदम गाढ़ी कमाई हो जिसमें अपना बुद्धि, विवेक और परिश्रम लगा हो उस कमाई से तप करो स्थाई हो जाएगा।

यहाँ राजा ने खुलासा किया कि दान में लगा धन कैसा था- न्यायार्जिता। राजा था तो मेरे पास धन तो अनेक प्रकार से आता था पर मैंने जो दान किया वो न्याय की कमाई से जो मेरे पास आमदनी हुआ उसका किया। अलंकारों से शोभित गुणशील सम्पन्न गायों की हरदम ब्राह्मणों को आवश्यकता रही है, ऋतसत वचन यानि मीठे और सत्य वचन ़बोलने वाले ब्राह्मणों को हमने गायें दी। महाराज केवल गाएं ही नहीं भूमि दान किया, स्वर्ण दान किया, हाथी दान किये, रथ का दान किया, घोड़े दान किए, कन्यादान किया, दास का दान किया, दासी का दान किया, तिल का दान किया, वस्त्र दान किये, अब तो कहना क्या इष्ट यज्ञ किया (मंदिर बनाना, मंदिर को सुधार करना, मरम्मत करना इसका नाम इष्ट यज्ञ है) पूर्त यज्ञ किया (बावड़ी, कुआ, तालाब, प्याऊ, नहर आदि से पानी का साधन समाज के लिए उपलब्ध कराना) दार्ष किया (आज की अमावस्या को किया पुण्य) आज दार्ष है, दार्ष भी कैसा, सोमवती दार्ष। आज की अमावस्या को किया गया पुण्य अनंत गुना बनता है। आज नैमिषारण्य में मेला लगा होगा वहाँ आज कम से कम 15 लाख लोग स्नान करेंगे सरोवर में, उस चक्र तीर्थ में। यह सोमवती को ही होता है) पूर्णमासी किया (पूर्णिमा को जो पुण्य किये जाते हैं) यह सब मैंने किये। चार पंक्तियों में उन्होंने अपने द्वारा किये दान-पुण्य की बात की।

भगवान पूछते हैं- भला फिर गिरगिट क्यों हो गए? इतना दान करने वाला महादानी छिपकली हो जाए यह भी आश्चर्य ही है। राजा नृग ने कहा- हम प्रतिदिन एक करोड़ गाएं दान करते थे। एक दिन हम किन्ही ब्राह्मण देवता को गाएं दान कर रहे थे, इतने में एक मुख्य द्विज (मुख्य द्विज ऐसे ब्राह्मण को कहते हैं जिसने जीवन में कभी दान लिया ही नहीं) की गाय इनमें आकर मिल गई और वह उन सब गायों के साथ अनजाने में मेरे हाथों से ब्राह्मण को दान हो गई। वह ब्राह्मण देवता दान में प्राप्त गोमाताओं को लेकर अपने घर जा रहे थे और वो मुख्य द्विज अपनी गोमाता को ढूँढ़ते-ढूँढ़ते उधर आ रहे थे। दोनों ब्राह्मणों का रास्ते में मिलन हुआ। मुख्य द्विज ने दान से प्राप्त उन हजारों गायों में अपनी गाय को पहचान लिया और उन ब्राह्मण देवता को कहा कि यह गोमाता मेरी है मुझे लौटा दो। उन ब्राह्मण देवता ने कहा यह तो राजा से मैंने दान में लिया है।इस प्रकार दोनों अपने-अपने पक्ष को रखते हुए विवाद में आ गए और मेरे सामने विवाद लेकर आए।

इस प्रकार मेरे सामने एक धर्म संकट खड़ा हो गया। दोनों ही सत्य थे क्योंकि उनकी खो गई तो वह उनकी थी और मैंने जिनको दान दिया वो उनकी हो गई। सूरदास जी का पद है- **करम गति टारे ना**

हि टरे, कोटि गाएं नित दान करे, फिर भी गिरगिट जोनि परे। करम गति टारे ना हि टरे। जिनकी गाय खोई थी उन मुख्य द्विज को कहा महाराज इस एक गाय के बदले एक लाख गाएं देते हैं, इसको छोड़ दो। यह अनजाने में हमसे दान हो गई। महाराज दान शब्द हमारे पूर्वजों ने सुना नहीं है, लेने की बात तो भूल जाओ। हमारे पूर्वजों से अब तक कोई परंपरा नहीं है दान लेने की। यह मेरी कुल की गाय है। गाय की बछड़ियों की परंपरा है, इसलिए हमें तो हमारी गाय ही चाहिए।

जिनको दान मिला उनको कहा महाराज यह गाय इनको दे दो बदले में आपको एक लाख गाएं देते हैं। तो ब्राह्मण देवता बोले- जीवन में पहली बार दान लिया है, उसमें से भी वापिस लेना चाहते हो। यह गोमाता वापिस तो हम नहीं देंगे। पहली बार में ऐसा हो गया फिर हम कभी दान लेंगे क्या? एक लाख तो क्या दस लाख गाएं दें तो भी मैं यह गाय नहीं दूंगा। राजा नृग ने कहा- प्रभु मैंने बहुत प्रयास किया मगर उन दोनों का निपटारा नहीं हो सका। मुझे बहुत पछतावा हुआ और इसी उलझन में एक दिन मेरा शरीर छूट गया।

जिन्दगी में अगर कोई न्याय के पद पर जाए, सामाजिक पद पर जाए, पंच के पद पर जाए तो उचित निर्णय करना चाहिये न करने से बड़ी भारी हानि दिखती है। अंत में राजा को नरक की ओर जाना पड़ा। यमराज ने कहा महाराज पुण्य का तो पहाड़ है पर पाप एक तिल है आप किसको पहले भोगेंगे? राजा ने विचार किया पहाड़ तो कब तक भोगेंगे, चिंता बनी ही रहेगी कि वह पाप भी भोगना है। उन्होंने कहा पहले तिल को ही भोगते हैं। पहले भूल को सुधारना चाहा तो उसी क्षण उनको गिरगिट की योनि प्राप्त हुई। तब से हम गिरगिट बनकर पड़े हैं आपके कुए में। आज आपकी कृपा दृष्टि पड़ी और आपके हाथों मेरा उद्धार हो गया।

भागवत की सीख

(पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज)

धन जमा करने में ऐसी गलती न करें

मधुमक्खी से दत्तात्रेय भगवान ने यह ज्ञान सीखा। मधुमक्खी का स्वभाव है शहद जमा करना। अभी कृष्ण पक्ष है सभी वनस्पतियों और फूलों से मध ु निकाल करके छाते में भर लेती है। मधु निकालने वाले को बहुत अच्छा ज्ञान है, वह जानता है शुक्ल पक्ष में मधुमक्खी मधु पी जाएगी तो वह अमावस्या की रात से पहले-पहले ही छत्ते का रस निकाल लेता है। मधुमक्खी को कभी पीने का मौका नहीं मिलता है। वह केवल जमा करती है।

संसार में श्रीमनों को धन जमा करने की मनाही तो नहीं है पर ध्यान यह रखें कि उनको पाना भी चाहिए, पीना भी चाहिए। अगर कहीं यह सोचें कि शुक्ल पक्ष में ही खाएंगे तो वह शुक्ल पक्ष आए या ना आए। कमाने के साथ खाओ भी और बांटो भी। नहीं तो मधुमक्खी के छत्ते की तरह निचोड़े जाते हैं। ऐसी कोई लीला घटित हो जाए चाहे राज दंड हो, चाहे चोर भय हो, चाहे रोग दण्ड हो, सारी संपत्तियां पीछे लुटानी पड़ जाती है। अच्छा होगा मेहनत करके कमाया हुआ कुछ खाओ, कुछ गोमाता को बांट दीजिए।

साधु गाँठी न बाँधिये

साधु, सन्यासी विरक्तों को कभी संग्रह नहीं करना चाहिये यह ज्ञान विशेषकर अग्नि से सीखना है। 100 मन जौ-तिल का स्वाहा करें तो आज ही अग्नि उसे जला देता है, कल के लिये बासी नहीं रखता है। इसी तरह साधु सन्यासी को बासी नहीं खाना चाहिये, गांठी नहीं बांधनी चाहिये। इसी को कबीरदास जी ने कहा है- साधु गांठ न बांध ही, उदर समाता लेय। आगे पीछे हरि फिरे जब मांगे तब देय।।

युवाओं के साथ मन की बात

(पू. गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

.......पिछले अंक से आगे

खैर अब वह छोटा सा बच्चा और उसके आसपास कबड्डी की यह सब आवाजें आ रही है, लेकिन उसको याद आती है अपने माता-पिता की बात कि मेरे माता-पिता ने कहा था- अगर तुझे गुरुकुल में प्रवेश नहीं मिला तो इससे बढ़कर हमारे लिए शर्म की कोई बात नहीं होगी और वह अपने आप पर नियंत्रण रखता है। थोड़ी देर में मिठाइयाँ बंट रही है गुरुकुल में और गुरुजी जानबूझकर उसके आसपास मिठाइयाँ बंटवाते हैं और बच्चा मन ही मन सोचता है कि जलेबी कितनी स्वादिष्ट है, लड्डू कितने स्वादिष्ट है, यह पकौड़ी कितनी स्वादिष्ट है ये सब आवाजें उसके कान में जा रही हैं। 5-6 साल का बच्चा कैसे अपने ऊपर नियंत्रण रखता होगा सोचो। क्या आपकी रुचि नहीं होती है जलेबी में? जलेबी खाने के नाम से मुँह में पानी आ गया होगा। लड्डू का नाम सुनकर, पकौड़ी का नाम सुनकर अपने मुंह में पानी आ जाता हैं, लेकिन वह बच्चा इस बात को याद रखकर कि अपने माता-पिता ने कहा था कि ऐसा किया तो गुरुकुल में प्रवेश नहीं होगा, मन पर नियंत्रण करता है।

और फिर थोड़ी देर में सब शांत हो जाता है और उसके गुरुजी आकर के उसके सिर पर हाथ रखते हैं- बेटा आओ आज से तुम हमारे गुरुकुल के विद्यार्थी हो और वह बच्चा गुरुजी को प्रणाम करता है। ऐसे विद्यार्थी जीवन शुरू होता है। आजकल की तरह थोड़े ही कि जब मन किया तब स्कूल गये, कॉलेज गये और जब मन किया तब भाग लिये। अनियंत्रित जीवन, जब मन किया खा लिए, जब मन किया सो लिये, जब मन किया पढ़ लिए। माफ करना यह कोई विद्यार्थी जीवन तो नहीं है, पता नहीं कौनसा जीवन है यह? विद्यार्थी जीवन तो एक तप होता है। रिश्तों को भी भूलना पड़ता है, सब कुछ भूलना पड़ता है। कई विद्यार्थी कहते हैं, भाई इसमें एक बच्चे ने मुझे प्रश्न भेजा कि महाराज पढ़ाई के चक्कर में जिंदगी तंग हो गई है। जो समझते हैं कि पढ़ाई से जिंदगी तंग हो गई वह क्या पढ़ाई करेंगे?

पढ़ाई में मेरा भी मन नहीं लगता था पर कथा में मन लगता था। जहाँ मन लगे वहाँ पर हम अपने जीवन को बना सकें। जिसका पढ़ाई में मन नहीं लगता और मूवी देखने में लगता है, क्रिकेट खेलने में लगता है तो क्या आप मूवी देखने में, क्रिकेट खेलने में जीवन की इमारत खड़ी कर सकते हैं? अगर यह कर सकते हो तो अपनी उस रूचि को वहां लगाओ। मैं आपके माता पिता को कह देता हूँ इसको मत पढ़ाओ वहां मन लगाने दो। यह फिल्में बनाएगा या बड़ा क्रिकेटर बनेगा और उसमें अपनी जिंदगी बनाएगा। लेकिन वहां अपनी रूचि केवल मन बहलाने के लिए, खेलने के लिए है तो इससे बात बनने वाली नहीं है। आप गलत रास्ते पर हैं। जब तक माता-पिता की कमाई पर पल रहे हो तब तक तो चल सकता है, पर आगे क्या होगा? बैटिंग आई तब तक खेल लिए और फील्डिंग आई तो रवाना हो गये कि मैं जा रहा हूं, घर से अर्जेन्ट फोन आया है, स्वास्थ्य ठीक नहीं है आदि आदि कई बहाने बनाने लग जाते हैं।

आप क्या जिंदगी बनाएंगे आप अपना स्वभाव भी नहीं बन पा रहे हैं, यह थोड़े ही होता है। हम एक बॉल में आउट हो गए तो हो गए कोई बात नहीं हमें फील्डिंग करनी चाहिए। हमें सामने वालों को खेलाना चाहिए। फिर बहाने बाजी नहीं करें कि हम तो जा रहे हैं घर पर, हमारी तबीयत ठीक नहीं, हमारे चक्कर आ रहे हैं। आप अपना व्यक्तित्व भी नहीं बना पा रहे हैं, आप अपने मित्रों के प्रति सही और विश्वसनीय छवि भी नहीं बना पा रहे है। इसलिए पहले ही पढ़ाई

में मन लगाना हो भले ही और किसी काम में मन लगाना हो तो सबसे पहले सब जगह से मन को हटाकर एक जगह लगाना होगा तो ही आप कुछ हासिल कर पाएंगे। कोई परीक्षा आपको बार-बार देनी पड़ रही है क्यों देनी पड़ रही है आप भी तो मनुष्य हैं, इंसान हैं। आपको समझाने वाले समझा रहे हैं, आप अच्छे से समझ रहे हैं फिर क्यों असफल हो रहे हैं? वह इसलिए कि पढ़ाई के समय हमारा ध्यान, हमारी रूचि कई जगह बंट जाते हैं। उससे यह सब तकलीफ बनती है।

ये कुछ बातें हैं जो मैंने आपसे कही है। इनको आप बहुत अच्छे से सोचो, बहुत अच्छे से इनको सुनो, समझो। अब तो यू-ट्यूब वाली सुविधा भी है, फिर से इसे सुनना। मैं और भी लंबा प्रवचन दे सकता हूं लेकिन फालतू बड़बड़ाना मेरा स्वभाव नहीं है। मेरा बोलने का कोटा तो कभी खत्म होता ही नहीं। लेकिन काम की केवल दो बातें ध्यान में आ जाए, ध्यान में रह जाय तो बहुत होता है।

अब आप लोगों के पूछे हुए प्रश्न एक-एक करके लेते हैं। कुछ प्रश्नों के उत्तर पूर्व में हुई चर्चा में आ गए हैं उन्हें तो दुबारा नहीं लेंगे।

प्रश्न है पढ़ाई में मन कैसे लगाएं, एकाग्रता और स्मरण शक्ति कैसे बढ़ाएं?

तो इसका उत्तर लगभग सब बता दिया है। आपकी रूचि होगी पढ़ाई में तो सब याद रह जायेगा। जिस मित्र से घनिष्ठता होती है उसके मोबाईल नम्बर मुँह पर रहते हैं, नहीं तो पिताजी के नम्बर भी याद नहीं है कइयों को।

फिर अगला प्रश्न है सदा प्रसन्न कैसे रहे, हमेशा प्रसन्न कैसे रहें?

इस प्रश्न के कई सारे उत्तर हो सकते हैं। लेकिन यह प्रश्न पढ़ते समय मेरे मन में जो सबसे पहले उत्तर आया वह यह था कि दूसरों के साथ अपनी तुलना मत करिए, आप सदा प्रसन्न रहेंगे। दूसरों के साथ तुलना करने से ही गड़बड़ होती है। किसी से अपनी तुलना मत करो, आप हमेशा प्रसन्न रहेंगे।

एक प्रश्न आया है कि पढ़ाई और लौकिक व्यवहार के साथ ठाकुरजी की भक्ति कैसे बनाए रखें?

भैया तीन चीज करते क्यों हो? पढ़ाई को और व्यवहार को भी भगवान की भक्ति में शामिल कर दीजिए कि मैं पढ़ाई और व्यवहार ठाकुरजी की प्रसन्नता के लिए कर रहा हूँ तो यह भक्ति में ही माना जाएगा।

अगला प्रश्न है युवावस्था में पड़ी गलत आदतें कैसे दूर करें। मोबाइल भी है, व्यसन भी है, आकर्षण भी है?

देखो भाई एक बात बताता हूं आपको- अंधेरे को भगाना है तो आप हाथ में एक लाठी लेकर उसे भगाने की कोशिश करोगे तो अंधेरा भागेगा क्या? नहीं भागेगा। लेकिन अगर एक दीपक जलाओगे तो पता ही नहीं चलेगा कि कहाँ चला गया अंधेरा। अगर बुराई को भगाना है तो अपने आपको अच्छाई के पास लाना पड़ेगा। अगर आप अच्छाई के पास आ जाओगे तो ये सब आदतें अपने आप छूट जायेगी। गलत आदतें छोड़ने के लिये आपको अच्छी आदतें विकसित करनी पड़ेगी। आप उनके सामने कुछ विकल्प खड़ा तो करो। उन गलत आदतों को लगे तो सही कि कोई हमारे भी विपक्ष में आया है। कोई चुनाव है, कोई एक पार्टी से उम्मीदवार खड़ा हुआ है और उसके सामने कोई दूसरा उम्मीदवार होगा ही नहीं तो जीत हार का क्या निर्णय होगा? बताओ, वह तो निर्विरोध हो गया ना। उनके सामने अच्छी आदतें नहीं होगी तो बुरी आदतें निर्विरोध हो जायेगी। जब आपको लगे कि जिंदगी में गलत आदतें आ गई है आप उनके सामने अच्छी आदतों को लाओ अगर सच में आपको उन्हें हटाना है तो। उन बुरी आदतों में आपको आनन्द आ रहा है कि आप कहें भैया अपनी अच्छी जिन्दगी चल रही है, हम तो इसी में खुश है अपना आनन्द लूट रहे हैं तो फिर कुछ होना नहीं है।

बाकी तो इसके लिए एक ही तरीका है- आप अच्छी आदतों को विकसित करिए अच्छी चीज सामने होगी तो अपने आप धीरे-धीरे इनकी वोटिंग कम होती जायेगी और वे हार जायेगी।

एक प्रश्न है कि सफलता की क्या परिभाषा है? मेरे भाई बहन आप गलत मत समझिएगा हमें। जिनके पास में सफलता की सामग्री नहीं है वे यह सवाल करते हैं। सफलता की क्या परिभाषा है? अरे भाई पूछना यह चाहिए कि मेहनत करने का क्या तरीका है। श्रम का तरीका पूछें, श्रम की परिभाषा पूछिए। प्रयासों पर चर्चा होनी चाहिए, परिणामों पर नहीं। आप परिणाम पर चर्चा करना चाहते हैं। सफलता क्या है? इसके कई उत्तर हो सकते हैं कि यह हो जाय तो सफल, वो हो जाए तो सफल। सफल तो हम हो गए दुनिया में ऐसी जगह पर जन्म मिला है जहाँ भगवान स्वयं अवतरित होते हैं। हमको ऐसी भारत भूमि में जन्म मिला है जहाँ भगवान जन्म लेते हैं। अब आगे क्या करना है उस पर बात करिए। सफल तो आप हो गए, सार्थक कैसे होना है उस पर बात करो। उल्टे-पुल्टे वीडियो बना दो अभी 500 1000 लाइक आ जायेंगे, हो गये सक्सेस। इससे क्या होना है?

अगला प्रश्न है कि पारिवारिक व अन्य समस्याओं से पढ़ाई में विक्षेप होता है, ऐसे में क्या करें?

ऐसे में हनुमान चालीसा का पाठ करो।

एक भाई ने पूछा है- समस्याओं का कैसे सामना करें? दिल की सुनें या दिमाग की?

न तो दिल बोलता है न दिमाग बोलता है। दिल के होठ है क्या, दिमाग के होठ है क्या? माता पिता की सुन प्यारे। दिल दिमाग को रहने दे।

अगला प्रश्न आया है कि समय का प्रबंधन कैसे करें?

देखो भाई! सोने की अंगूठी है, इसे कहाँ रखूं, कैसे रखूं इसके लिये मुझे किसी के मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है। कीमती वस्तु है, अपने आप सही ठिकाने रखूंगा। मेरे गले में सोने की माला है कोई किसी को बताने की जरूरत नहीं उसको कहाँ रखना, कैसे रखना, क्या करना है। ऐसे ही समय को अगर हम कीमती समझेंगे तो इसका प्रबंधन अपने आप होगा, उसके लिए किसी को गाइड करने की जरूरत नहीं।

एक बहन ने पूछा है- आत्मविश्वास की कमी रहती है, नेगेटिव विचार आते हैं, जीवन निराशा पूर्ण होता है, कैसे ठीक करें?

कथा सुनो, गोमाता के पास जाओ, उत्साही लोगों से मिलो, ठंडे लोगों से नहीं। ताजा लोगों से मिलो। कुछ लोगों को उदास लोग अच्छे लगते हैं। क्या हुआ, तेरे क्या हुआ? उत्साही लोगों से मिलो, नाचते हुए लोगों से मिलो, खेलते हुए लोगों से मिलो वे आपको ऊर्जा से भरेंगे, उत्साह से भरेंगे।

एक भाई का प्रश्न आया है- ओवरथिंकिंग (अधिक सोचना) से कैसे बचे हैं? भावनाओं को नियंत्रित कैसे करें?

चलो जीवन में जब भावना आएगी तो भावनाएं अपने आप नियंत्रित हो जाएगी। देखो भावनाओं से तो कथा बनती है। कथा में जो बातें बताई जाती है वे सब भावनाएं तो हैं, अगर इनको नियंत्रित कर दूंगा तो मैं बोलूंगा क्या? एक से पांच बजे तक यहाँ बैठा पंखा घूमाता रहूँ मैं? आपकी भावनाओं का केंद्र गलत हो जाता है तब यह समस्या है, नहीं तो भैया भावनाएं तो एक झरने की तरह है। झरना हमेशा बहता हुआ अच्छा लगता है। वह रुक जाता है तो लोग मायूस हो जाते हैं। आज अगर मैं मेरी भावनाओं को रोक दूं तो जो साल भर की कथाएं ले रखी है वह बेचारे क्या करेंगे? इतना बड़ा फोटो छपवाकर बाजार में विज्ञापन किया बताओ उनका क्या होगा? झरना किस लिये बहता है? आसपास के लागों को प्रसन्नता देने के लिये, प्राणियों की प्यास बुझाने के लिये। वह बहना बंद हो जायेगा तो उनका क्या होगा? भवनाओं को बहने दीजिये, उसका लक्ष्य सही हो..........

गोकृपा कथा

पूज्य ग्वालसंत स्वामी श्री गोपालानंद सरस्वतीजी महाराज

शिव पूजा से पहले नंदी कीपूजा

अग्नि पुराण में यह बताया गया है कि शिव पूजा से पहले नंदी की पूजा होनी चाहिये। कौनसे नंदी की? साक्षात् नंदी की। पत्थर के नंदी तो संकेत है समझने के लिये। हमारी स्थूल आंखें सूक्ष्म दिव्य देव शक्तियों को पहचान नहीं पाती इसलिये हमारे पूर्वजों ने समझने के लिये मूर्तियों की पूजा आरम्भ की। हम केवल पत्थर के नंदी को ही कुमकुम लगा दें तो क्या शिवकृपा, गोकृपा हो जायेगी? हमने देखा है माताएं खूब शिवजी के मंदि जाती है, भीड़ की भीड़ जाती है। माताएं शिवजी के मंदिर जाती है, कुमकुम ले जाती है, चावल ले जाती है, पानी ले जाती है, शिवजी पर चढ़ाती है, नंदी पर चढ़ाती है और उनके घर के बाहर कोई नंदी दिख जाये तो कहती है कि जाओ इसे भगाकर आओ। अरे कहाँ से शिवकृपा पाओगे भाई?

गोमाता हम पर कृपा करने हेतु आई है

जो भी सड़कों पर इधर-उधर गाय माता घूमती है वो सब भक्तों पर कृपा करने के लिए आती है। आप सुबह बता रहे थे कि हमारे फैक्ट्री के बाहर बहुत सारी गोमाताएं घूमती हुई आ जाती है। वह कृपा करने के लिए आ रही है खाने के लिए नहीं आ रही है। **निज भक्तों को तारण ताई इत-उत फिरे गोविंद की गाई।** यह गांठ बांध लो कि जो भी गोमाता इधर-उधर सड़कों पर घूम रही है, भटक रही है वह सब हमारे ऊपर कृपा करने के लिए घूम रही है, भटक रही है। जो तीनों लोकों की जगदंबा है वह धरती पर गाय का रूप लेकर आई है। दीनहीन बनकर गोमाता आई है तेरे द्वारे, घर ले जाकर बांध दे यह बंधन छुड़वाए सारे।

गोमय ही गाय का मुख्य उत्पाद है

जिस गाय माता को हम दुर्भाग्य से पशु समझते हैं, हमारे हृदय में उनके लिए मां जैसा भाव उत्पन्न हो जाए और गोमाता को हम उसी आदर के साथ अपने जीवन में स्थान दें तो फिर गाय माता का गोबर ही पर्याप्त है हमारे कल्याण के लिए। हम आजकल गाय के दूध पर विचार करते हैं, दही पर विचार करते हैं, घी पर विचार करते हैं लेकिन वास्तविकता अलग है मेरे भाई-बहनों । दूध दही घी गोमाता के अतिरिक्त उत्पाद है। मेरे भाई बहनों गोमाता का मुख्य उत्पाद गोबर, गोमय है। अकेले गाय माता के गोबर में इतनी शक्ति है कि वह हमारे जीवन में ऊर्जा और सत्व को भर सकता है।

जिसे गाय से प्रेम नहीं वो कैसा हिन्दु ?

बिना पति की सुहागिनें बहुत घूम रही है आजकल। बिना पति की सुहागिन समझते हो न। जिसकी मांग में सिन्दूर भरा है, वो कहती है मैं सुहागिन हूँ। वैसे ही आजकल घर में गाय नहीं है, गाय की सेवा नहीं है फिर भी कहे मैं हिन्दु हूँ। ऐसे कहने वाले फर्जी हिन्दुओं की संख्या भारत में 90 करोड़ से भी ज्यादा है। 90 करोड़ से भी ज्यादा फर्जी हिन्दु है। जिस धर्म की माँ गाय है, भूखों मर रही है गोशालाएं खोलनी पड़ रही है, एक-एक गाय घर में रख ले तो सड़कों पर गाय नजर नहीं आयेगी और जो गोभक्त कहलाते हैं वे तय करे उस घर का पानी नहीं पिऊंगा जिस घर में गोमाता नहीं। उस घर में रिश्ता नहीं करूंगा जिस घर में गाय नहीं होगी, उस घर में जाऊंगा नहीं जिस घर में गाय नहीं होगी। चाहे वो मेरा कितना ही सगा क्यों न हो। जो मेरी माँ का नहीं वो मेरा नहीं। बात सीधी सी है, इसमें दिक्कत क्या है? वो अगर आपका होगा और आपको बुलाना चाहेगा तो गाय घर में लायेगा। अरे भाई ऐसे लोग गाय को त्यागकर जीवन गुजार सकते हैं तो उन लोगों के बिना आपका जीवन भी गुजर जायेगा।

गोमाता की अद्भुत महिमा

गाय माता की महिमा ही ऐसी है जो थोड़ा लेती है और बदले में बहुत कुछ देती है। कर्जा वो रखती नहीं है। अगर हम सेवा कर भी दें न गोमाता की, अगर किसी गोशाला में हमने समय और दान लगाया है तो समय और संपत्ति दोनों कई गुणा करके गाय माता वापस लौटाकर देती है। इसीलिए मेरे भाई बहनों महाभारत में लिखा है-

भुक्त्वा तृणानि शुष्कानि पीत्वा तोयं जलाशयात्।
दुग्धं ददति लोकेभ्यो गावो विश्वस्य मातरः।।

रूखे सूखे घास के तिनके खाकर और जलाशय से जल पीकर, संसार को दूध पिलाने वाली गाय विश्व की माता है, जिसके दूध से हम अपने शरीर का पोषण करते हैं। गोमाता घर आकर के पवित्र दूध देती है और जंगल में तो धरती को गोमय और गोमूत्र का बहुत कुछ पोषण देकर के आती ही है। गोमाता इधर भी देती है और उधर भी देती है। इसलिए गाय माता सारे विश्व की माता कहलाती है।

हमें कैसे लोगों का संग करना चाहिये

मनुष्य को बल के साथ बुद्धि भी चाहिए तो गोमाता का दूध और गोमाता की सेवा बल और बुद्धि दोनों देते हैं। वराह पुराण के 204 वें अध्याय के तीसवें श्लोक में कहा है- तेज, शांति, स्मृति, पुष्टि, वृद्धि, लज्जा, विद्या, मेघा ये सब गोमाता के पीछे-पीछे चलते हैं। दूध, दही, घी, खीर इन सबसे आहूति देने पर बुद्धि बढ़ती है। गोमाता के सेवक को बल भी मिलता है, बुद्धि भी मिलती और कृपा भी मिलती है। फिर विजय निश्चित है। जिंदगी की जंग में जीतना है तो गोसेवा शुरू कीजिये।

गोमाता से सात्विक बल-बुद्धि मिलते हैं

जब हम बार-बार अच्छी संगति करते हैं तो अंत में इतने मजबूत हो जाते हैं कि हमारे ऊपर कुसंगति का भी कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। लेकिन एक बार तो सुसंगति कर ही लेनी चाहिये। कुसंग का त्याग पूर्ण रूप से करना चाहिये। अगर संभव नहीं है तो सज्जनों का संग करना शुरू कर दो एक बार तो धीरे-धीरे कुसंग की बीमारी को मिटा देगा।

गोचारण की महिमा

जिस स्थान पर गाय माता दुःखी रहती है उस स्थान के मंदिरों से देवता भी निकल कर चले जाते हैं। गोचर में यूं तो बहुत शक्तियों रहती है, मगर जिस गोचर में गाय माता दुःखी रहती हो वहाँ की दिव्य शक्तियों चली जाती है, उस क्षेत्र का सुपर पावर है वो खत्म हो जाता है, सामान्य शक्तियों रह जाती है। इसलिए गोचारण क्षेत्र को पवित्र रखने की बात भगवान ने बार-बार कही है। ब्रह्मांड पुराण के उत्तर भाग में तो स्पष्ट लिखा है कि गोचारण की महिमा तो इतनी है कि भगवान श्री कृष्ण थोड़े से बड़े हुए तो भी वे कंधे पर लकुटिया रखकर गैया चराने जाया करते थे। ब्रह्म पुराण में लिखा है कि श्री कन्हैया गले में वनमाला पहनकर प्रीतिपूर्वक गैया चराया करते थे। हमारे धर्म ग्रंथ तो यह कहते हैं कि गोचारण की श्रेष्ठ रीति तो यह है कि खुद गो चराने जाओ। जब श्री कृष्ण खुद गैया चराने जा सकते हैं तो हम लोग उनसे बड़े थोड़े ही हो गए। हम लोग भी गाय चराने जा सकते हैं और जाना ही चाहिए। जब भाव से गोसेवा करते हैं तो प्रभु कृपा करके बड़े संतुष्ट हो जाते हैं। भगवान संतुष्ट क्यों होते हैं? क्योंकि भगवान को गो से प्रेम है। गोचरण से जब गैया प्रसन्न होगी तो कन्हैया भी प्रसन्न होंगे ही।

सब सुखों की प्राप्ति कैसे हो सकती है

जब व्यक्ति सुख की चाहत रखता है और सुखी होने का प्रयास करता है तो उसको वस्तुतः जाना ही सुखदाता की शरण में चाहिए। जिसको भोजन करना है और वह बिजली विभाग के कार्यालय में जाकर के और टेबल कुर्सी लगाकर बैठ जाए तो क्या उसको भोजन की थाली मिलेगी? कदापि नहीं मिलेगी। भोजन के लिये उसको किसी भोजशाला में जाना चाहिए या घर जाकर परिवार जनों को बताना

चाहिए कि मुझे भूख लगी है। सखा जी भी यही बता रहे हैं कि मानव सुखी तो होना चाहता है, लेकिन वह सुखदाता के पास नहीं जाकर अन्यत्र भटकता है।

यूं तो हर व्यक्ति सुख की तलाश में है। जन्म के पहले दिन से मनुष्य सुख की तलाश करता है और मृत्यु के अंतिम दिन तक सुख की तलाश में रहता है। लेकिन फिर भी उसको सुख नहीं मिल पाता है, क्योंकि वह गलत सुख की तलाश कर रहा है। वास्तव में मेरे भाई-बहनों! अगर हमको सुख चाहिए तो हमको महाभारत के एक छोटे से श्लोक को समझाना पड़ेगा। सखा जी कह रहे हैं कि मेरी इष्ट गोमाता है वह निश्चित ही सुख की दाता है। **मातरः सर्व भूतानाम गावः सर्वसुखप्रदाः।** अर्थात गाय सम्पूर्ण विश्व की माता है और सबको सुख देने वाली है।

गोमाता सारे जगत की माता है। अगर कोई मानव उसकी शरण ले लेता है तो फिर उसके जीवन में कोई दुःख नहीं आता है। पुत्र बनकर के शरण ले ले तो। शर्त है कि हम उसकी पूर्ण शरणागति लें। प्रश्न खड़ा होता है कि हम में से कितने लोग गाय को माता मानते हैं? हाथ खड़े करिए। बहुत अच्छा प्रणाम है आपको। अब मेरे दो-तीन प्रश्नों के उत्तर देने के बाद हाथ खड़े करके दिखाना। अगर गाय माता हमारी माता है तो हमारे परिवार की सदस्य हुई कि नहीं हुई? वो हमारे परिवार की सदस्य है तो कुछ दिन पहले आपके परिवार में है बच्चों के विवाह का कार्यक्रम हुआ था, पूरे परिवार के लिए नए-नए वस्त्र खरीद के लाए गए थे। किसी के 2000 का किसी के 5000 का। गाय भी तो हमारी माता है, जब 50000 के कपड़ों की गठरी बांध के लाए थे तो 100 रुपए की गोमाता के लिये नई रस्सी लाना याद आया क्या? बिल्कुल नहीं।

शादी के समय सबके लिए सोने चांदी के जेवर खरीदे आपने, किसी के 5000 का किसी के 50000 का। मान लिया कि गाय माता सोने के गने नहीं पहनती लेकिन 50 रु. की पीतल की घंटी तो गोमाता के लिए ला सकते थे? शादी में बहुत अच्छी मिठाइयां बनी। 3 दिन तक शानदार भोजन किया उस समय गोमाता को गुड़, दलिया खिलाना याद आया क्या? कई लोग तो जोश-जोश में शादी के दिन गैया मैया को घास जिमाना भी भूल जाते हैं, पूरे दिन उसको भूखे रहना पड़ता है।

आपके यहाँ गर्मी भी बहुत पड़ती है, सर्दी भी बहुत पड़ती है। कुछ दिन पहले सर्दी निकली थी। सर्दी में खूब कंबल और रजाइयां ओढ़ कर सोए आप, उस समय शहर की सड़कों पर गोमाता ठंड से कांप रही थी। रहने देते अच्छी कंबल लेकिन टाट के फटे कपड़े तो गोमाता को ओढ़ा सकते थे। आपने ओढ़ाए क्या? गर्मी में बचने के लिए हमने एक से एक बढ़कर शानदार भवन बनवा दिए और अंदर कूलर लगवा दिए, कहीं चार पेड़ भी लगाकर बड़े कर दिए हो के गैया मैया को गर्मी लगेगी तो दो घड़ी छांव में बैठेगी, किया क्या?

यह तो छोटी-छोटी सामान्य बातें हैं। गहराई में जाएं तो हमारे परिवार की कोई दादी है, माताजी है, जब प्राण निकलते हैं तो चार लोग कंधे पर उठाकर उनका अंतिम संस्कार के लिए इज्जत से लेकर जाते हैं, लेकिन जब किसी गोमाता के प्राण निकलते हैं किसी सड़क पर पड़ी होती है तो नगर पालिका से किसी को बुलाकर ट्रैक्टर के पीछे बांधकर घसीटते हुए कैसे गांव से बाहर फेंक कर आते हैं। जब वक्त आता है गोपाष्टमी का, मकर संक्रांति, गोद्वादशी, वत्स द्वादशी, नेतागिरी का उस समय हम जोर-जोर से चिल्लाते हैं- गाय हमारी माता है। ऐसा पाखंड, ऐसा झूठा रिश्ता इंसान गोमाता के साथ निभाता है। कहने को वह सारी जिंदगी कहता है कि गाय हमारी माता है लेकिन उसके आचरण में कहीं नजर नहीं आता है कि वह माँ-बेटे के रिश्ते को ईमानदारी से निभा रहा है। जो सारे जगत की माता और सब सुखों की दाता है, उसकी सत्य शरण लेकर ही मानव सुखों की प्राप्ति कर सकता है।

श्री भक्तमाल कथा

(पूज्य ब्रह्मचारी श्री मुकुन्दप्रकाश जी महाराज)

पिछले अंक से आगे...मूल गुजराती से हिन्दी रूपान्तरण

ब्रह्माजी की आज्ञा से प्राण देवता, वायु देवता, और आदित्य देवता ने यज्ञ किया। यज्ञ में से भगवती गोमाता प्रकट हुई। तीनों ब्रह्माजी के पास गये कि हम तीनों में से यह गोमाता किसे मिलनी चाहिये। ब्रह्माजी ने कहा- यह गोमाता यज्ञ की अग्नि में से प्रकट हुई है, यज्ञ स्वरूपा है, इसलिये यह गोमाता अग्निदेव के पास रहेगी। ब्रह्माजी की आज्ञा से गोमाता को अग्नि देव को समर्पित की गई। इसलिये यज्ञ और गाय में कोई भेद नहीं है। आप नित्य घर में यज्ञ नहीं कर सको तो कोई बात नहीं, आप यदि नित्य गोमाता को ग्रास देना आरम्भ कर दें तो यह बहुत बड़ा यज्ञ होगा। गोसेवा बहुत बड़ा यज्ञ है, इसके शास्त्र प्रमाण है

महाभारत के अनुशासन पर्व में पूज्या गोमाता के प्राकट्य की कथा आती है। एक बार ब्रह्माजी ने दक्ष प्रजापति को सृष्टि विस्तार की आज्ञा दी। दक्ष प्रजापति ने विचार किया कि सृष्टि का विस्तार तो हो जायेगा, परन्तु उसका पालन-पौषण किस प्रकार से होगा? प्रजापति दक्ष ने प्रजा के हित की इच्छा से सर्वप्रथम उनकी आजीविका का ही निर्माण किया। जैसे देवता अमृत का आश्रय लेकर जीवन-निर्वाह करते हैं, उसी प्रकार समस्त प्रजा आजीविका के सहारे जीवन धारण करती है। स्थावर प्राणियों से जंगम प्राणी सदा श्रेष्ठ हैं। उनमें भी मनुष्य और मनुष्यों में भी ब्राह्मण श्रेष्ठ है, क्योंकि उन्हीं में यज्ञ प्रतिष्ठित है। यज्ञ से सोम की प्राप्ति होती है और वह यज्ञ गौओं में प्रतिष्ठित है, जिससे देवता आनंदित होते हैं। अतः पहले आजीविका है फिर प्रजा। समस्त प्राणी उत्पन्न होते ही भूख के कारण भोजन के लिये कोलाहल करने लगे। जैसे भूखे-प्यासे बालक अपने मां-बाप के पास जाते हैं, उसी प्रकार समस्त जीव जीविका दाता दक्ष के पास गये। प्रजाजनों की इस स्थिति पर मन-ही-मन विचार करके भगवान प्रजापति ने प्रजावर्ग की आजीविका के लिये उस समय अमृत का पान किया। अमृत पीकर जब वे पूर्ण तृप्त हो गये, तब उनके मुख से सुरभि (मनोहर)गंध निकलने लगी। सुरभि गंध के निकलने के साथ ही 'सुरभि' नामक गोमाता प्रकट हो गयी जिसे प्रजापति ने अपने मुख से प्रकट हुई पुत्री के रूप में देखा। उस सुरभि ने बहुत-सी 'सौरभेयी' नाम वाली गौओं को उत्पन्न किया, जो सम्पूर्ण जगत के लिये माता समान थी। उन सब का रंग सुवर्ण के समान उद्दीप्त हो रहा था। वे कपिला गौऐं प्रजाजनों के लिये आजीविका रूपी दूध देने वाली थी। अमृत में से गोमाता प्रकट हुई है, अमृत का पान करने के बाद गोमाता प्रकट हुई इसलिये गोमाता के पंचगव्य अमृत के समान है।

बहुत खुशी की बात है कि यहाँ निकोल, अहमदाबाद में व्यापारियों ने बड़े-बड़े फार्म हाऊस बनाये हैं। इन फार्म हाऊस पर 10-20 गायों की सेवा करते हैं। इससे इनको अमृत समान दूध-दही-घी मिल रहा है। इनकी गोमाता के प्रति निष्ठा और इनके द्वारा की गई गोसेवा का ही परिणाम है कि इनके घर पर सेवा लेने और इनको आशीर्वाद प्रदान करने गोमाता स्वयं पधारी है। यहाँ कथा के लिये आप सब पधारे हैं और यह सब व्यवस्था आपने की है इसके पीछे भी आप सबकी गोभक्ति और गोसेवा ही है।

यहाँ एक बहुत सरल गोभक्त है श्री बाबुभाई पटेल, घर पर गोमाता की सेवा करते हैं और पूरा परिवार अपने खानपान में गव्यों का ही उपयोग करते हैं, उन्होने कहा-बापू हमारे घर पधारो। हम आपके घर गये, जहाँ देखा कि बहुत ही भाव से गोमाता की सेवा हो रही है। हमने आपको पथमेड़ा में जो समृद्धि गोमाता है, उसका स्वरूप यह गोमाता का विग्रह भेंट

किया। इस स्वरूप के दर्शन कर बहुत आनन्दित होने लगे। इस विग्रह के दर्शन से आप इतने आनन्दित हो रहे हैं, पथमेड़ा में विराजमान प्रत्यक्ष समृद्धि गोमाता के दर्शन करोगे तब कितने आनन्दित होंगे। हमने आपको पथमेड़ा पधारने हेतु निवेदन किया है। हमारी समृद्धि गोमाता श्री पथमेड़ा गोधाम और राष्ट्रीय रचनात्मक गोसेवा महाअभियान की अधिष्ठात्री है। श्री गोधाम पथमेड़ा की परम्परा है कि यहाँ कोई व्यक्ति सर्वेसर्वा नहीं होता है, यहाँ गोमाता ही सर्वेसर्वा और इसकी मालिक है। वर्तमान में यहाँ की सर्वेसर्वा श्री समृद्धि गोमाता है और इससे पूर्व इनकी माता श्री मनोरमा यहाँ की मुखिया थी। यह समृद्धि गोमाता बहुत ही अद्भुत है। हमने तो कई बार देखा है परम् श्रद्धेय पथमेड़ा वाले महाराज जी और समृद्धि गोमाता आपस बातें करते हैं ऐसा लगता है। गाय में और पथमेड़ा महाराज जी में कोई अंतर दिखता नहीं है।

बाबुभाई ने बताया कि महाराज जी हमारे जीवन में जो कुछ भी अनुभव हो रहा है यह गोमाता के घर में पदार्पण के बाद ही हुआ है। जब से गोमाता ने हमारे घर में पांव रखा है तब से सब मंगल ही मंगल हो रहा है। गाय तो मंगल का भी मंगल करने वाली है। गाय पवित्र से भी पवित्र है। कृपानाथ कहाँ तक कहा जाय कि गाय इतनी पवित्र है कि इसका मल-मूत्र पवित्र से पवित्र कार्यो में उपयोग किया जाता है। गाय के गोबर से स्नान करके भगवान भी पवित्र होते हैं।

श्री कृष्ण के जन्म और उनके गोकुल में होने का समाचार मिलने के बाद कंस हर जगह ढूंढ-ढूंढकर नवजात शिशुओं की हत्या करवाने लगा ताकि अगर किसी ने कृष्ण को छुपाकर रखा हो तो भी वह बचे नहीं। कंस ने अपनी मुंहबोली बहन राक्षसी पूतना को इसका जिम्मा सौंपा। पूतना एक विशाल शरीर की शक्तिशाली राक्षसी थी और अपना रूप बदलने में भी माहिर थी। पूतना ने श्री कृष्णा को मारने के लिए एक युक्ति अपनाई। उसने अपने स्तनों पर विष लगाया और कृष्ण को दूध पिलाने के लिये एक सुंदर स्त्री का रूप धर लिया।

पूतना रूप बदलकर गोकुल में सीधे बाबा नंद और मैया यशोदा के घर में गई। पूतना ने अपने मनोहर रूप से यशोदा और बलराम की माता रोहिणी को मोहित कर लिया। वे दोनों उसे कुछ न बोल सकीं। उन्हें लगा कि जैसे सभी उनके लल्ला को देखने आते हैं वैसे ही यह सुंदर स्त्री भी आई है।

पूतना ने कृष्ण को गोद में लिया और उन्हें माँ बनकर दूध पिलाने लगी। लेकिन कृष्ण तो भगवान थे। उन्होंने पूतना का असली रूप पहचान लिया था। वे अपने दोनों हाथों से पकड़कर स्तनपान करने लगे। बस फिर क्या था! पूतना जोर-जोर से चिल्लाने लगी और बाल कृष्ण को दूर हटाने की कोशिश करने लगी लेकिन कृष्ण ने उसे कसकर पकड़ रखा था। भयभीत होकर पूतना अपने असली रूप में आ गई और चिल्लाते हुए आकाश में उड़ने लगी। उसका यह रूप देखकर सारे गोकुल निवासी घबरा गए। दर्द से चिल्लाते हुए अंततः पूतना जोर से नीचे धरती पर गिर गई। दूध के साथ भगवान ने उसके प्राण भी खींच लिये। नंद, यशोदा और रोहिणी दौड़कर उसके पास आए और देखा कि कृष्ण अभी भी पूतना के स्तनों के चिपके हुए थे। राक्षसी का शरीर बहुत ऊंचा था, सब उसके ऊपर चढ़ गये। मैया यशोदा ने झट से अपने लल्ला को उठाया और गले से लगा लिया। वे सब जान गए कि कृष्ण ने एक और राक्षस का वध कर दिया है।

माँ तो माँ होती है। यशोदा मैया को लगा कि राक्षसी के स्पर्श से मेरा लल्ला अपवित्र हो गया है। वे सीधे उसे गोमाता के गोष्ठ में ले गई और लल्ला को पुनः पवित्र करने क लिये गोबर और गोमूत्र से स्नान कराया। तो गोबर गोमूत्र इतने पवित्र है। गोमाता का पूंछ लल्ला के ऊपर घुमाया..........

श्रीमद्भागवत कथा

(गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज)

.....पिछले अंक से आगे

......पर वहाँ जाकर तो मैंने एक और आश्चर्य देखा- एक स्त्री है जो यमुना तट पर बैठी है, उसके पास दो बूढ़े व्यक्ति लेटे हुए हैं और चारों तरफ खड़ी खड़ी युवतियों उन्हें पंखे से हवा डाल रही है और जो स्त्री बैठी है वह दसों दिशाओं में देख रही है और इंतजार कर रही है। मुझे देखा, मुझे देखकर वह बाला बोल पड़ी, वो जो स्त्री बैठी हुई थी वो बोली -

भो भो साधो: क्षणं तिष्ठ: मत्चिंतामपि नाशय!
दर्शनं तव लोकस्य सर्वथाघ हरं परम् !!

श्री भक्तिदेवी ने नारदजी को देखकर कहा- अरे हे साधू महात्मन! क्षणिक ठहरिये और मेरी चिंता का निवारण कीजिये क्योंकि आपका दर्शन करने मात्र से मनुष्य के सारे पाप स्वत: भस्म हो जाते हैं। ओ साधु देवता! आप रुक जाइये। क्यों? बोले आप साधु लोग जो हो वो सबके कष्ट दूर करते हो तो हमारे भी कष्ट दूर कर जाओ क्योंकि लोग जब संतों के नजदीक आते हैं ना तो अपनी समस्या सब रख देते हैं सामने। बोले महाराज- बेटा मानता नहीं है, पत्नी झगड़ा करती है, धंधा सही नहीं चल रहा है आदि आदि। संतों के ना तो बेटा है, ना धंधा है, उनको कुछ अनुभव है क्या? साधु को बेटा, बेटी, धन्धा किसी का अनुभव नहीं है फिर भी उनसे मार्गदर्शन क्यों लिया जाता है? क्योंकि साधु जो होते हैं, साधुओं का लक्षण ही होता है कारूणिका:। दूसरे के दु:ख को देखकर के द्रवित हो जाते हैं, तो उनके द्वारा मन में प्रार्थना करने से वह सामने वाला सुखी हो जाता है। इसलिए वह जो स्त्री बैठी है वह कह रही है कि हे महापुरुष! आप संतों का जो दर्शन होता है वह दर्शन ही संपूर्ण चिन्ताओं का नाश करने वाला है और महाराज जब अनेक जन्म-जन्मों का कोई पुण्य उदय होता है तब किसी संत की हमको प्राप्ति होती है। हम लोगों को लगता है कि साधु हमारी तरह ही होते हैं। न ऊपर से टपके हैं और ना पृथ्वी फोड़ के निकले हैं। परंतु वर्तमान समय में ये जो साधु हैं ये भगवान श्री नारायण का विग्रह स्वरूप हैं। जैसे गोमाता साक्षात् नारायण का विग्रह है ऐसे ही ये संत भी भगवान का विग्रह हैं। हम न तो इतना तप कर सकते हैं और न ही भजन, हमको तो संतों की सन्निधि सहज में मिल गई है वो भी दो-दो महापुरुषों की-पथमेड़ा वाले महाराज जी और मलूकपीठ वाले महाराज जी।

आप एक बात बताइए कि जब गज और मगरमच्छ दोनों आपस में झगड़ रहे थे और कई हजार वर्षो तक दोनों का युद्ध चला पर जब भगवान श्री हरि उद्धार करने के लिए आए तो पहले गज का उद्धार किया, पकड़ने वाले ग्राह्य का पहले कल्याण किया। गज भगवान का भक्त था, मगरमच्छ ने उसके चरण पकड़ रखे थे इसलिये भगवान ने पहले उसका कल्याण किया। वृत्रासुर भी अपनी स्तुती में कहता है- महाराज मुझे आपके दास का भी दास बनाइये। इसलिए संतन के संग लाग रे तेरी अच्छी बनेगी, संतन के संग लाग रे तेरी बिगड़ी बनेगी।

संतों का आश्रय क्यों लेते हैं? हम लोगों को सीधे-सीधे तो पता चलता नहीं है कि शास्त्र में क्या लिखा है? महाराज जी अभी कह रहे थे कि वह गोभक्ति के, गोसेवा की प्रेरणा के अद्वितीय वक्ता है कथा व्यास के रूप में। हमको क्या पता किस पुराण में क्या लिखा है? हम सब तो अपने-अपने घर के कामों में व्यस्त थे, परंतु सब कुछ सहज हो गया क्यों? क्योंकि एक संत ने बीड़ा उठाया तो सब तक पहुंच गई। इसलिए संतों का आश्रय खूब जरूरी है संत का संग किया हुआ कभी भी व्यर्थ नहीं जाता है। ध्रुवजी ने कितना संग किया श्री नारदजी का, प्रहलाद जी ने कितना संग किया श्री नारदजी का, परंतु वे

उन-उन स्थानों पर विराजमान हो गए जहां कोई सोच नहीं सकते। अब ध्रुवजी को ही लीजिये- अपने पिताजी के द्वारा अपमानित होकर के जंगल की ओर जा रहे हैं तो बीच में थोड़ी देर का ही सत्संग हुआ था, परंतु उस सत्संग के बल पर उन्होंने अविचल पद प्राप्त किया। आज भी वे ध्रुवलोक में विराजमान हैं। प्रहलाद जी ने कितना सा संग प्राप्त किया?

बात बनेगी उसी की जो सत्संग करेगा। हम बातें बड़ी-बड़ी कितनी ही करें। जैसे संतों के साथ रह रहे हैं हम लोग, मेरे लिए ही कहूँ मन में अहंकार होता है बड़े संतों की जो कृपा प्राप्त हो रही है उसका। दीपक तले अंधेरा होता है। जो लोग समीप होते हैं वे भी कई बार वंचित रह जाते हैं। संत एक दिशा है। संत एक विचार है। संत हम लोगों को दिख रहे हैं कि वे एक पांच भौतिक शरीर के रूप में विद्यमान है, परंतु ये संत शरीर में तो विद्यमान है परंतु उनके चलने से, उनके बोलने से वे एक नया उदाहरण हम सब लोगों के सामने प्रस्तुत कर रहे हैं।

महाजनों येन गतः स पन्था: अर्थात् महान लोग जिस मार्ग से गये, वही मार्ग सही है। उसी का अनुसरण करना चाहिये। **धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्।** यह धर्म का तत्व जो है वह बताने वाला कौन है? वह तो एक गुफा में छुपा हुआ है। वह बताने वाले भी संत है। रहस्य प्रकट करने वाले भी संत हैं। कई बातें ऐसी होती है ना जैसे सौंठ और मिर्च बोलना है। किसी आदमी को भाषा का ज्ञान न हो तो वह सौंठमी रस बोले तो कैसा लगता है? क्योंकि उसको पढ़ना नहीं आ रहा है। तो ऐसे ही जो हमारे शास्त्रों की बातें हैं, जो परंपरा प्राप्त संतो को संतों से प्राप्त हुई है वह तो संत ही बता सकते हैं। चलता फिरता कोई आदमी नहीं बता सकता। महलों की गति महली ही जाने। महल में रहने वाला व्यक्ति ही महल के बारे में जानता है। सोना-चांदी का भाव जवेरी ही जानता है। सत्संग की गति कौन जानता है? वह संत जानते हैं। इसलिए संतों का संग करना चाहिए।

वह देवी बोल रही है नारदजी से कि हे साधु! आप रुक जाइए और मेरी चिंता का भी नाश करते हुए जाइए। तब नारद जी ने पूछा- देवी आप कौन हो? आप अपना परिचय दीजिये। तब वह देवी बोली-

अहं भक्तिरिति ख्याता इमौ मे तनयौ मतौ।
ज्ञान वैराग्यनामानी कालयोगेन जर्जरौ।।

मेरा नाम भक्ति है और ये जो दो लेटे हुए बूढ़े व्यक्ति हैं ये दोनों मेरे पुत्र ज्ञान और वैराग्य हैं। कलयुग के प्रभाव से ये दोनों बूढ़े हो गए। अब आप बताओ किसी की माँ तो जवान हो और उसके बेटे बूढ़े हो जाय तो कैसा बुरा लगता है माँ को। लगता है कि नहीं लगता है? मन को दुःख लगता है ना। और ये जो देवियां खड़ी हैं, जो पंखा हिला रही हैं डुला रही हैं ये कौन है बोलिए? गंगा जमुना सभी नदियां हैं। बोले मेरी सेवा के लिए आई हैं।

हे ब्रह्मऋषि नारद! मैं द्रविड़ देश में उत्पन्न हुई और मेरी वृद्धि कर्नाटक राज्य में हुई। कहीं-कहीं मुझे महाराष्ट्र ने भी अवसर दिया। वहाँ से मैं गुजरात पहुँची तो गुजरात में कमजोर हो गई। बाद में यह गुजरात का कलंक नरसी भक्त ने मिटा दिया। भयंकर कलयुग के प्रभाव से मेरे अंग विनष्ट हो गए थे तो मैं लौट करके वृंदावन आई तो मैं तो पुनः युवा हो गई, जवान हो गई और अपने मूल स्वरूप को प्राप्त कर लिया पर ये जो ज्ञान और वैराग्य नाम के जो मेरे दो पुत्र हैं इसी स्थिति में पड़े हुए हैं।

नारदजी बोले माताजी आप मन में धैर्य रखें। भक्ति बोली- नहीं धैर्य नहीं रखेंगे। अब हम हमारा जहाँ सम्मान नहीं होता है वहाँ नहीं रहेंगे। मैं वृंदावन छोड़कर कहीं अन्यत्र चली जाऊंगी। नारद जी कहते हैं- माता आप यहाँ से छोड़कर चली जाएंगी तो इस वृंदावन का क्या होगा? तो बोली-नारदजी एक बात बताइए ऐसा कहीं होता है क्या ....

देश में हो रहे गोवध के पाप में क्या हमारी भी हिस्सेदारी है?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

सभी सनातन धर्म प्रेमी गोभक्तों को सादर जय गोमाता जय गोपाल! सभी से निवेदन है कि प्रतिदिन अपने सामर्थ्य अनुसार गोसेवा अवश्य करें।

विचार करें,,,

देश में प्रतिदिन लाखों निरपराध पूज्या गोमाता का वध किया जा रहा है, निराश्रित गोवंश भूख-प्यास से काल कल्वित हो रहा है, उस पाप में क्या हमारे जैसे सामान्य व्यक्ति की भी कोई हिस्सेदारी है?

हाँ जी, उस पाप में हर भारतीय की भागीदारी है,,,

मुख्य वजहें निम्नलिखित हैं,,,

1. हमारे वोटों से चुनी सरकारें गोवध हेतु लाइसेंस देती है, इसको रोकने वालों को जेल में डालती है।
2. बिना गोसेवा किये दूध पी रहे हैं, घी-मिठाई खा रहे हैं इसलिये हम भी इस पाप के भागीदार।
3. जो भी गोवंश सड़कों पर निराश्रित घूम रहा है वो हमारे ही किसी के घर से छोड़ा गया है।
4. निराश्रित गोवंश की पीड़ा को आँखों से देखकर भी उसकी अनदेखी कर रहे हैं।
5. किसी न किसी कारण से ऐसे कई पापियों से संबन्ध बनाये हुए हैं।
6. कहीं न कहीं हमने गो अधिकारों को हड़प रखा है।

इस पाप से कैसे बचें,,,

इससे बचने एक ही उपाय है- 'गोसेवा'

गो अपराधों से मुक्ति गोसेवा करने से ही होती है। गोसेवा करने का सामर्थ्य भगवान ने हमें दिया है। हम उसे छुपा कर रख रहे हैं, उसे छुपाएं नहीं, गोमाता को समर्पित करें। हृदय खोलकर गोसेवा करें। भगवान ने जो हमें तन-मन-धन दिया है, उसमें कम से कम 10 प्रतिशत भाग गोमाता का है,,,

वो भाग गोमाता को सुपुर्द करें,,,

मनन करें,,, मनन करें,,, मनन करें,,,

प्रत्येक मरने वाला व्यक्ति कुछ न कुछ तो छोड़ कर ही जाता है,,,

साथ में ले जाता है गोमाता की सेवा नहीं करने का पाप,,,

बस इसी का सौदा करना है,,,

जो छोड़कर जा रहे हैं, उसमें से कुछ अंश आज से ही गोमाता की सेवा में देना शुरू कर दें,,,

तो जो पाप लेकर जा रहे हैं, वो यहीं छूट जायेगा,,,

गोसेवा में समय दें, गोशाला खोलें,,,

गोशाला को आर्थिक सहयोग करें,,,

कभी गोसेवा का विरोध न करें,,,

चारा, पानी की व्यवस्था करें,,,

दवाइयाँ की व्यवस्था करें,,,

गोमाता के रहने हेतु घर बनवाएं, शेड बनवाएं,,,

आप सभी को गोमाता अपनी सेवा में रखें, इसी अपेक्षा के साथ आप सभी को बहुत-बहुत साधुवाद!

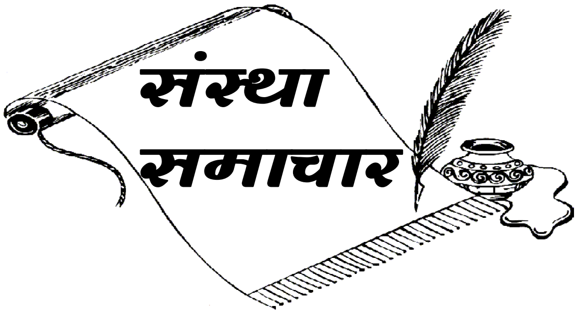

मई माह में हुए परम् श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज के प्रवास का संक्षिप्त वृत्तांतः

5 मई को परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामीजी महाराज श्री कामधेनु महाशक्तिपीठ मेंदर्शनार्थ श्री गोधाम पथमेड़ा पधारे।पूज्या श्री कामधेनु गोमाता के दर्शन उपरान्त महाराज जी दत्तचौकी पर विराजे और देशभर से आये गोभक्तों चुप साधन विषयक सत्संग श्रवण का लाभ देने के साथ गोसेवा हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया। उसी दिन सांयकाल को पुनः नंदगाँव पधार गये।

15 मई को गोसेवा कार्यो के निरीक्षण हेतु प.श्रद्धेय स्वामीजी महाराज श्री गोधाम पथमेड़ा, श्री खेतेश्वर गोसेवा आश्रम खिरोड़ी तथा श्री महावीर हनुमान नंदीशाला गोलासन पधारे और उसी दिन सांयकाल को पुनः नंदगाँव पधार गये।

31 मई को नव निर्मित श्री गंगा जमुना पथमेड़ा गोचिकित्सालय माखुपुरा का शुभारम्भ कार्यक्रम परम् श्रद्धेय गोऋषि जी महाराज की पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ।

इनके अतिरिक्त समय पूरे मई माह में प. श्रद्धेय स्वामीजी महाराज का नंदगाँव में ही विराजना हुआ।

श्री गंगा जमना पथमेड़ा गोचिकित्सालय माखुपुरा का हुआ शुभारम्भ

परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराज की पावन निश्रा एवं प. पू. आचार्य भगवंत श्रीमद् विजय रत्नाकर सुरीश्वरजी महाराज की प्रेरणा से 31 मई को श्री घेवरचंदजी सुपुत्र श्री बस्तीमलजी श्री श्रीमाल बालड़ परिवार सत्यपुर द्वारा श्री गंगा जमना पथमेड़ा गोचिकित्सालय के रूप में एक अद्वितीय गोसेवा प्रकल्प का भव्य शुभारम्भ समारोह आयोजित हुआ। महाराजजी ने आशीर्वचन में कहा कि जिसके हृदय में दया है वही मानव है। दया ही धर्म का मूल है। सभी प्रकार की सेवाओं में गोसेवा सर्वोपरि है और गोसेवा में भी बीमार गोवंश की सेवा सबसे ऊँची है। इस अवसर पर गोसेवा प्रेमी संत महात्मा, गोभक्त कार्यकर्ता, जनप्रतिनिधि, पत्रकार एवं गण्यमान्य नागरिक उपस्थित रहे। समारोह के तहत 30 मई को 'एक शाम गोमाता के नाम' भजन संध्या का कार्यक्रम आयोजित हुआ। 31 मई को गोभक्त भामाशाह परिवार की ओर से सभी के लिये गोव्रती महाप्रसादी की व्यवस्था की गई।

श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया में प्रतिमाह होगी गोकथा

मध्यप्रदेश शासन द्वारा स्थापित एवं श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा संचालित श्री कामधेनु गो अभयारण्य सालरिया में प्रतिमाह अमावस्या को होगी गोमहिमा कथा। मासिक सत्संग के तहत दिनांक 27 मई मंगलवार अमावस्या के पुण्य पर्व पर पूज्य ग्वाल संत स्वामी श्री गोपालानंद जी सरस्वती जी महाराज के मुखारविंद से गोमहिमा कथा हुई तथा घोषणा की गई कि प्रतिमाह अमावस्या को इस गो अभ्यारणय में गोकथा का आयोजन होगा।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

आगामी आसोज नवरात्र में सूरत में ''श्रीराम गोभक्ति महामहोत्सव'' का होगा भव्य आयोजन

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की पावन प्रेरणा से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा शाखा सूरत द्वारा आगामी आसोज नवरात्र में ''श्रीराम गोभक्ति महामहोत्सव'' का आयोजन किया जाएगा। जिसमें देश के प्रसिद्ध कथावाचक एवं श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के कार्यकारी प्रधान संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज श्रीराम कथा करेंगे। इस हेतु दिनांक 18 मई को सूरत महानगर में एक बैठक का आयोजन हुआ। बैठक में निर्णय लिया गया कि इस आयोजन को दिव्य और भव्य बनाना है। आगामी बैठक में आयोजन के निमित्त कार्यकर्ताओं को जिम्मेदारियों दी जायेगी। सूरत महानगर में नए युवाओं को जोड़ने एवं सूरत में गोसेवा का विस्तार करने पर भी चर्चा हुई। बैठक में स्थानीय गोभक्त कार्यकताओं के साथ श्री आलोकजी सिंहल, श्री विनोदजी अग्रवाल, श्री संदीपजी पोद्दार, श्री लालसिंहजी राजपुरोहित, श्री विपिनजी जालान की विशेष उपस्थिति रही।

कर्णावती महानगर में विशेष अवसरों पर गोभक्तों के निवेदन पर उनके निवास पर गोपूजन की होगी व्यवस्था

पूज्य महंत श्री योगेशदासजी महाराज के पावन सानिध्य एवं श्री सुभाष जी जोड़ीवाल की अध्यक्षता में दिनांक 20 मई को श्री सुरभि शक्तिपीठ सेवा समिति कर्णावती की बैठक आयोजित हुई जिसमें विशेष अवसरों पर गोभक्तों के निवेदन पर उनके निवास पर गोपूजन की व्यवस्था करवाने एवं श्री सुरभि हरिहर आराधना मण्डप को सुसज्जित करने हेतु प्रस्ताव लिये गये। बैठक में श्री देवाराम पुरोहित, श्री राजकुमार जी अग्रवाल, श्री आलोक जी सिंहल, श्री अंजनी जी गुप्ता, श्री सागरभाई रायका पूर्व राज्यसभा सांसद के अलावा कई स्थानीय गोभक्त कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

आगामी श्राद्ध पक्ष में दिल्ली एन.सी. आर. में ''गो ज्योति दर्शन एवं गोपुच्छ तर्पण'' का होगा विशेष आयोजन

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास शाखा दिल्ली एन.सी.आर. की दिनांक 23 व 24 मई को आयोजित बैठकों में यह निर्णय लिया गया कि आगामी श्राद्ध पक्ष में दिल्ली एन.सी.आर. में कुल 15 स्थानों पर दिनांक 6 सितम्बर से 21 सितम्बर के मध्य गोज्योति दर्शन एवं गोपुच्छ तर्पण का आयोजन किया जायेगा। गोपूजन एवं गो दर्शन यात्रा के लिये रथ बनवाने और इस आयोजन हेतु एक 31 सदस्यी समिति बनाने के निर्णय भी लिये गये। इसके अलावा यह निर्णय भी लिया गया कि देहरादून का कार्यालय अब दिल्ली कार्यालय के माध्यम से संचालित होगा। दिल्ली एन.सी.आर. से प्रतिवर्ष न्यूनतम 6 करोड़ की गोसेवा करने का भी लक्ष्य निर्धारित किया गया। गोसेवा में युवाओं को और अन्य कार्यकर्ताओं को अधिक से अधिक जोड़ने का भी निर्णय लिया गया।

बैठक में श्री यशपाल जी गुप्ता और श्री भारतभूषण जी को जिम्मेदारी दी गई कि वे श्री नरेश जी गोयल के नेतृत्व में गोग्रास की बकाया राशि संकलित करेंगे। इस अवसर पर दिल्ली एन.सी.आर. के मुख्य-मुख्य गोभक्त कार्यकर्ताओं के साथ डॉ विरेन्द्र जी गर्ग, श्री एस.एन. बंसल, श्री राजेश जी चेतन, श्री आलोक जी सिंहल, श्री नरेश जी गोयल, श्री एन.आर.जी जैन, श्री हरिओम जी तायल, श्री यशपालजी गुप्ता, श्री मांगीलाल जी पारिक, श्री विष्णु भगवानजी गोयल, श्री साधुराम जी गर्ग, श्री देवेन्द्रजी जैन, श्री प्रकाश जी कंदोई उपस्थित रहे।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा निर्मित

वैदलक्षणा

दन्त शोभा

टूथपेस्ट

वैदलक्षणा™
श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा
सात्विक आहार - शुद्ध विचार

वैदलक्षणा

शहद

- Rich in Antioxidants
- Natural Energy Booster
- Boosts Immunity
- Good for Skin & Hair

7300044444

www.vedlakshana.com

कुल पृष्ठ- 36
जून 2025
प्रकाशन तिथी : 01 जून 2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए
RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No : RJ/SRO/9681/2025-2027

गोसेवार्थ सहयोग के प्रकार

1.	एक गोमाता को गोद लेकर परिवार का सदस्य बनायें प्रतिवर्ष	रु 21000
2.	आओ हरा घास चारा अर्पित करें प्रति गाड़ी	रु 31000
3.	आइये सूखे घास चारे की सेवा करें प्रति गाड़ी	रु 1,01,000
4.	गोमाता की सेवा में अक्षय भूदान समर्पित करें प्रति बीघा	रु 2,51,000
5.	जीवन के साथ भी–जीवन के बाद भी आजीवन गोसेवक बनें प्रति गोवंश	रु 2,51,000
6.	गुड़ की एक गाड़ी गोमाता को परोसें सेवा राशि	रु 4,51,000
7.	अशक्त गोवंश हेतु पौष्टिक आहार की प्रति गाड़ी सेवा राशि	रु 5,00,000
8.	बीमार गोवंश का उपचार करें मासिक सेवा राशि	रु 11,00,000
9.	गोधाम द्वारा सेवित गोवंश सेवार्थ एक दिन का पौष्टिक आहार, हरा–सूखा घास चारा अर्पित करें सेवा राशि	रु 35,00,000

NAME - SHRI GODHAM MAHATEERTH PATHMEDA LOK PUNYARTH NYAS
BANK OF BARODA A/C - 08490100023827 | IFSC - BARB0ASHRAM (FIFTH CHARACTOR IS ZERO)
Branch : Ashram Road, Ahmedabad, Mob: 77420 93179, 76650 59999, 70730 00151